फरवरी 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

मैं अनंत ज्ञान वाला हूं

मैं अनंत शक्ति वाला हूं

मैं अनंत दर्शन वाला हूं

मैं अनंत सुखधाम हूं

''आत्मा अगोचर है
इसलिए उसके गुणों द्वारा ही आत्मा की भजना हो सकती है।''

वर्ष : 14 अंक : 4
अखंड क्रमांक : 160
फरवरी 2019
Total 32 pages (including cover)

Editor : Dimple Mehta
© 2018
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अद्‌भुतता आत्मा के गुणों की

संपादकीय

जिन्होंने आत्मा का संपूर्ण अनुभव किया है और जो दूसरों को आत्मा की अनुभूति करवाने में समर्थ है, ऐसे ज्ञानी पुरुष की कृपा द्वारा कोटि जन्मों के पुण्य के फल स्वरूप हमें आत्मा सहज रूप से प्राप्त हो जाता है, लेकिन प्रतीति के रूप में। अब, जैसे-जैसे जागृति बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे आत्मा का उसके गुणधर्मों सहित अनुभव होता जाएगा।

किसी भी चीज़ को पहचानना हो तो उसके गुणधर्मों से पहचान सकते हैं। आत्मा तत्त्व है, उसे पहचानने के लिए उसके गुणधर्म पहचानने पड़ेंगे। अनंत गुणों में बड़े-बड़े चार गुण; अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति और अनंत सुख ये परमानेन्ट गुण हैं।

मूल आत्मा खुद ही ज्ञान है, प्रकाश है। प्रकाश के आधार पर सबकुछ दिखाई देता है, समझ में आता है व जान सकते हैं। अर्थात् देखना-जानना ही उसका स्वभाव है। दृष्टा ने दृश्य को देखा तो दर्शन उत्पन्न होता है, ज्ञाता ने ज्ञेय को जाना तो ज्ञान उत्पन्न होता है। तय होने से पहले दर्शन, तय होने के बाद ज्ञान।

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री द्वारा अनुभव किए गए आत्मा के गुणधर्मों का वर्णन किया गया है। थ्योरी के साथ प्रैक्टिकली किस तरह से इन गुणों का उपयोग करें, जैसे कि किसी भी चीज़ में उलझन हो तब 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ' बोलते ही ज्ञान हाज़िर होकर उसके बारे में बताता है। अनंत दर्शन जब कोई चीज़ हमें परेशान करे तब समझ हाज़िर होकर उसका *निकाल* कर देती है। 'अनंत शक्ति', चाहे कैसी भी खराब परिस्थिति में भी समभाव से, चिंता किए बगैर निकल जाता है। जब शरीर में वेदना हो तब, 'मैं अनंत सुख का धाम हूँ' बोलने से आमने-सामने बैलेन्स होकर सब ठीक हो जाता है और मानसिक परेशानी के समय ऐसा बोलने पर अंदर सुख बरतता रहता है। जिस सुख को ढूँढने बाहर न जाना पड़े, वह खुद का अनंत सुख है। उसमें आध्यात्मिक व वास्तविक शक्ति है, भौतिक शक्ति नहीं है लेकिन जब प्रकट होगी तभी काम आएगी।

ज्ञान प्राप्ति के बाद, महात्माओं में अब पाँच आज्ञा का पालन करने से जागृति बढ़ेगी और जागृति सहित पाँच आज्ञा का पालन करने से शुद्धात्मा स्वरूप का अनुभव होगा फिर शक्तियाँ प्रकट होती जाएँगी। शुद्ध उपयोग में आने के लिए आत्म गुणों का आराधन होना ज़रूरी है। यदि स्व-गुणों को पहचानकर इनका उपयोग किया जाए तो अनुभव दशा में पहुँच जाएगा। आत्मा के विविध गुणों का धीरे-धीरे अभ्यास करने से उनका अनुभव होगा। अंत में महात्मा सहज आत्म स्वरूप दशा में पहुँचकर निरंतर मुक्ति व अखंड समाधि दशा का अनुभव करें, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अद्‌भुतता आत्मा के गुणों की

आत्मा के मुख्य गुण

प्रश्नकर्ता : आत्मा को पहचानने के लक्षण क्या हैं?

दादाश्री : पहचानना तो अविनाशी पद है, अनंत सुखधाम है। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख। खुद के सुख को ढूँढने बाहर नहीं जाना पड़ता और दु:ख तो है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : आत्मा को अनंत गुणधाम कहा है तो वे गुण कौन-कौन से हैं?

दादाश्री : आत्मा के मुख्य दो गुण है: ज्ञान और दर्शन। अन्य गुण तो अनंत हैं। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति और अनंत सुख, ये चार गुण बड़े ही ज़बरदस्त हैं, फिर बाकी के सब छोटे-छोटे गुण तो बहुत से हैं, जैसे कि अमूर्त, अगुरु-लघु, अव्यय, अच्युत, अरूपी, अव्याबाध स्वरूप वगैरह है।

ओहो! उसकी अद्‌भुतता का तो अंत ही नहीं है! सिर्फ नाम याद करते ही भीतर शांति, शांति, शांति हो जाए।

गुण परमानेन्ट, धर्म टेम्परेरी

प्रश्नकर्ता : आत्मा के अनंत गुणधर्म हैं, तो वे गुणधर्म, धर्म कहलाते हैं या गुण कहलाते हैं?

दादाश्री : गुण परमानेन्ट हैं और धर्म टेम्परेरी है।

'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ', वह उसका 'परमानेन्ट' गुण है। 'मैं अनंत दर्शन वाला हूँ', वह उसका 'परमानेन्ट' गुण है। 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ', वह उसका 'परमानेन्ट' गुण है। 'मैं अनंत सुखधाम हूँ', वह उसका 'परमानेन्ट' गुण है।

आत्मा के गुण 'परमानेन्ट' हैं और उसके धर्मों का उपयोग हो रहा है। ज्ञान 'परमानेन्ट' है और देखना-जानना, वह 'टेम्परेरी' है। क्योंकि जैसे-जैसे अवस्था बदलती है, वैसे-वैसे देखने वाले की भी अवस्था बदलती है। जैसे कि जब सिनेमा में अवस्था बदलती है तब देखने वाले की भी अवस्था बदलती है।

ज्ञेय अनंत, इसलिए ज्ञान अनंत

प्रश्नकर्ता : 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ', ऐसा बोलते हैं, उसे समझाइए।

दादाश्री : 'मैं' तो ज्ञान वाला है लेकिन अनंत ज्ञान वाला है इसलिए उसकी लिमिट नहीं है। बाहर की चीज़ें अनंत हैं। जानने की चीज़ें, ज्ञेय चीज़ें अनंत हैं इसलिए 'मैं' अनंत ज्ञान से उन ज्ञेयों को जानने वाला हूँ।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान का अर्थ जानपन होता है क्या?

दादाश्री : हाँ, ज्ञायकपन। भले ही देह को मार पड़े लेकिन परमानंद नहीं जाता। उसे वह जानता ही रहता है। (देह से) उसका संबंध ज्ञाता

व ज्ञेय वाला है। अनंत ज्ञेय हैं इसलिए (आत्मा) अनंत ज्ञान वाला है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा ज्ञायक है, उसके लिए ज्ञेय अनेक प्रकार के होते हैं या नहीं?

दादाश्री : यह जो ज्ञायक है वह अनंत ज्ञान वाला है इसलिए ज्ञेय भी अनंत हैं। जो ज्ञायक स्वभाव है, वह कैसा है? अनंत ज्ञान वाला है। किसलिए अनंत ज्ञान भाग? क्योंकि ज्ञेय भी अनंत हैं इसलिए।

ज्ञान गुण है, ज्ञेयों को जानना उसका धर्म है

प्रश्नकर्ता : ज्ञेयों को देखने-जानने में, ज्ञान व दर्शन धर्म कहलाते हैं या गुण?

दादाश्री : ज्ञान उसका गुण कहलाता है। ज्ञान व दर्शन व सुख, वे सभी गुण कहलाते हैं। क्योंकि 'मैं जो हूँ, वह शाश्वत हूँ।' ऐसा कहना चाहते हैं। फिर जब उस ज्ञान का उपयोग अनंत ज्ञेयों को जानने में परिणामित अनंत अवस्थाओं में होता है तब वह धर्म कहलाता है। ज्ञान का धर्म कहलाता है, ज्ञान तो गुण है, शाश्वत गुण है। उसका धर्म क्या है? ज्ञेयों को जानना।

आत्मा ज्ञान वाला नहीं, खुद ही ज्ञान है

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने कहा, 'मैं' ज्ञान वाला है तो साथ ही मूल आत्मा भी ज्ञान वाला ही है न?

दादाश्री : वह खुद ही ज्ञान है। खुद ज्ञान वाला नहीं है, वह खुद ज्ञान ही है। उसे ज्ञान वाला कहें तो 'ज्ञान' और ' वाला' वे दोनों अलग कहे जाएँगे। यानी कि मूल आत्मा खुद ही ज्ञान है, वह खुद प्रकाश ही है। उस प्रकाश के आधार पर ही यह सब कुछ दिखाई देता है। उस प्रकाश के आधार पर यह सब समझ में भी आता है और जान भी सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ', ऐसा हम बोलते हैं लेकिन मूल आत्मा किसी भी चीज़ का पज़ेशन (मालिकी भाव) नहीं रखता है। वह खुद ज्ञान स्वरूप ही है।

दादाश्री : ज्ञान स्वरूप ही है, बाकी कुछ भी नहीं। एब्सल्यूट (संपूर्ण) ज्ञान है।

मूल आत्मा शुद्ध ही है। शुद्ध ज्ञान के अलावा अन्य कोई चीज़ नहीं है। शुद्ध ज्ञान किसे कहें? किस थर्मामीटर के आधार पर उसे शुद्ध ज्ञान कहेंगे? तो वह यह कि, जिस ज्ञान से राग-द्वेष और भय नहीं हों, वह ज्ञान शुद्ध ज्ञान है और शुद्ध ज्ञान, परम ज्योति स्वरूप है, वही परमात्मा है। परमात्मा कोई स्थूल चीज़ नहीं है, ज्ञान स्वरूप है, एब्सल्यूट ज्ञान मात्र है। एब्सल्यूट इसीलिए कि उसमें अन्य कोई चीज़ मिश्रित नहीं है और मिश्रण हो भी नहीं सकता।

जैसे-जैसे प्रदेश खुलते जाएँगे, वैसे-वैसे प्रकाशमान होता जाता है ज्ञान

आत्मा के अनंत प्रदेश हैं और एक-एक प्रदेश में अनंत-अनंत ज्ञायक शक्ति है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा अनंत प्रदेशी है उसका कितना परिमाण है, वह समझाइए। एक-एक प्रदेश पर कितना ज्ञान है?

दादाश्री : आत्मा एक द्रव्य है, अनंत प्रदेशी का एक द्रव्य है। हर एक प्रदेश में, अनंत प्रदेशों में, हर एक प्रदेश में, ज्ञान प्रकाश है। हर एक प्रदेश में जितने प्रदेशों के आवरण खुले, उतने प्रदेशों का ज्ञान खुलता जाता है। अर्थात् मनुष्यों में किसी का यह प्रदेश खुल जाए, तो उसमें वकील का ज्ञान खुल (अनावृत) जाता है। किसी का यह प्रदेश खुल जाए तो डॉक्टर का ज्ञान खुल जाता है। किसी का यह प्रदेश खुल जाए तो वैसा ज्ञान खुल जाता है। अर्थात् हर एक में अलग-अलग

प्रदेश का ज्ञान खुल जाता है। जब सर्वत्र प्रदेशी ज्ञान खुल जाता है, तब केवलज्ञान होता है।

पूरी दुनिया में जितने जीव हैं उन सभी जीवों का ज्ञान एक ही आत्मा में है। जब सभी जीवों का ज्ञान उसके आत्मा में प्रकाशमान हो जाता है तब उसे केवलज्ञान कहते हैं। अत: जब केवलज्ञान होता है तब सभी आत्माओं का ज्ञान उसमें प्रकाशमान हो जाता है।

अवस्थाएँ बदलती हैं, फिर भी ज्ञान रहता है शुद्ध ही

प्रश्नकर्ता : 'अनंत ज्ञेयों को जानने में परिणामित हुई अनंत अवस्थाएँ' अर्थात् क्या?

दादाश्री : पूरा जगत् ज्ञेयों से भरा हुआ है, अनंत ज्ञेय हैं। अब उन ज्ञेयों को जानने में आत्मा के ज्ञान की अनंत अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं और वे अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं फिर भी वे अवस्थाएँ 'उससे' चिपकती नहीं हैं। चिपकती नहीं हैं इसीलिए शुद्ध ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : क्या शुद्ध रहता है?

दादाश्री : ज्ञान अवस्था 'उससे' चिपकती नहीं है। अभी अगर हम आम देखें तो अपना ज्ञान आम के आकार वाला हो जाएगा। अपना ज्ञान ज्ञेयाकार हो जाता है। जितना बड़ा आम हो उतने आकार का हो जाएगा। डंठल (डंठी) से लेकर सबकुछ एक्ज़ेक्ट उसी रूप हो जाता है लेकिन ज्ञान अलग और आम भी अलग। अर्थात् ज्ञेय अलग और ज्ञाता भी अलग। फिर यहाँ से दृष्टि ज़रा यों घुम गई तो वह दर्शन बंद हो जाता है और दूसरे ज्ञेय में चला जाता है। अर्थात् चिपकता नहीं है। जो चिपकता नहीं है, वह ज्ञान शुद्ध ज्ञान कहलाता है बल्कि यह बुद्धिजन्य ज्ञान चिपक जाता है। बुद्धि का ज्ञान आम देखता है लेकिन वह आम का कितना हिस्सा देख सकता है? जैसे कि यह लाइट है न, लाइट दोनों तरफ देख सकती है क्या? इस तरफ की लाइट से आपको इस तरफ का दिखाई देता है, लाइट से आपको पीछे का तो नहीं दिखाई देता न?

प्रश्नकर्ता : नहीं दिखाई देता।

दादाश्री : इसी प्रकार बुद्धि को पीछे का नहीं दिखाई देता जबकि आत्मा को तो चारों तरफ से दिखाई देता है। स्व-पर प्रकाशक सभी तरफ का देख सकता है। अत: यह बुद्धि, आम को एक ही तरफ से देख सकती है और फिर देखते ही जीभ में पानी जाता है। आम वहाँ पर है और यहाँ जीभ में पानी आ जाता है। इतना अधिक इफेक्टिव है। वह अलग नहीं रह सकता जबकि यह अलग रहता है।

जब आम न हो तब वापस आ जाता है, मेरा लाइट मेरे घर में। आम को देखने जाए तो उससे मेरा कुछ नहीं बिगड़ता। आम खट्टा हो तो कहीं मैं खट्टा नहीं हो जाता।

कहता क्या है? आम के आकार का हो जाता हूँ, अत: ज्ञेयों को जानने में ज्ञेयाकार हो जाता हूँ। ज्ञेयाकार बन जाता है फिर भी ज्ञेय नहीं बनता।

प्रश्नकर्ता : संक्षेप में, मैं आम नहीं बन जाता।

दादाश्री : यह लाइट इस तरह स्पर्श करे तो इसका मतलब यह नहीं कि लाइट उससे चिपक जाती है। यह तो उसके मन में ऐसा होता है कि यह मुझे ही चिपक गया। कुछ भी नहीं चिपका। ज्ञेय को ज्ञान कभी भी नहीं चिपकता, उसी को ज्ञान कहते हैं। ये दो वाक्य यदि समझ में आ जाएँ तो बहुत ही कल्याण कर देंगे।

अब ये तो पाँच सौ आम हैं लेकिन ऐसी

अनंत अवस्थाओं में मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ, सर्वांग शुद्ध हूँ। ऐसी शुद्धि नहीं रही, इसीलिए तो यह संसार की उत्पत्ति हो गई है।

चिपकता है ज्ञेयों में अशुद्ध उपयोग से

बाकी, ज्ञेय बाधक नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यों ज्ञेय बाधक नहीं हैं लेकिन हमें ज्ञेयों में जो आसक्ति है, वह बाधक है?

दादाश्री : हाँ, बस। उस पर इसे आकर्षण है। अत: हम राग को क्या कहते हैं? आसक्ति।

ज्ञान की जो अवस्थाएँ होती हैं, वे भी ज्ञेय के आकार की, ज्ञेयाकार होती है। आम जैसा आकार हो जाता है। कोई मनुष्य आ रहा हो तो उसके आकार का हो जाता है। सभी के आकार जैसा हो जाता है। उसके बावजूद भी वह चिपकता नहीं है, छूट जाता है। संसार में अशुद्ध उपयोग होने की वजह से वह उसमें चिपक जाता है।

तब संसार क्या कहता है कि आत्मा चिपक गया। भाई, वह नहीं चिपका। जो चिपक जाए वह आत्मा नहीं है और आत्मा नहीं चिपकता।

प्रश्नकर्ता : जो चिपकता है, वह अहंकार है?

दादाश्री : अहंकार। हमने साफ ही कहा है न!

अनंत ज्ञेय, वे ज्ञेय कितने प्रकार के हैं? ओहोहो! जहाँ देखो वहाँ ज्ञेय ही दिखाई देते हैं। उनमें भी वह खुद संपूर्ण शुद्ध है। आत्मा का प्रकाश ज्योति स्वरूप है, वह ज्ञेयों को देखता है और फिर खुद ज्ञेयाकार हो जाता है लेकिन उसके बावजूद भी उसे कुछ स्पर्श नहीं करता। उसमें भी शुद्धता है। अब, वहाँ पर मान बैठा है कि मुझे यह कर्म लग गया। वह मान बैठा है। माना हुआ किस तरह से छूटेगा? वह क्यों मानता है? भीतर पुण्य और पाप के जो पर्याय हैं न, वे पर्याय उससे ऐसा करवाते हैं, मनवाते हैं। उन पर्यायों को हम पूरी तरह से तोड़ देते हैं, इसलिए भूमिका क्लियर हो जाती है। फिर जागृति आ जाती है।

ज्ञेयों में परिणामित होने के बावजूद भी मैं शुद्ध ही हूँ। कोई पूछे, 'वहाँ पर नहीं चिपका? तब कहता है, 'नहीं भाई। मैं शुद्ध ही हूँ' इसलिए घबराना मत। कहीं 'मैं' (आत्मा) नहीं बिगड़ा है, आपकी (अंहकार की) मान्यता बिगड़ी है।

सभी प्रदेशों में संपूर्ण शुद्ध

प्रश्नकर्ता : यह जो 'संपूर्ण शुद्ध' और फिर 'सर्वांग शुद्ध' लिखा है, वह किसलिए लिखा है?

दादाश्री : लोगों को पता चले कि सभी तरह से शुद्ध है। यही समझने के लिए लिखा है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या आत्मा के अंग होते हैं कि सर्वांग लिखा है?

दादाश्री : आत्मा के अंग नहीं होते, प्रदेश होते हैं। सभी प्रदेशों में शुद्ध हैं लेकिन प्रदेश नहीं समझने की वजह से सर्वांग कहा है। 'सर्वांग' अर्थात् संपूर्ण। लोगों को समझ में आ जाता है। प्रदेश समझ में नहीं आते।

प्रश्नकर्ता : संपूर्ण शुद्ध और सर्वांग शुद्ध इन दोनों में क्या अंतर है?

दादाश्री : संपूर्ण शुद्ध हूँ अर्थात् एक्ज़ेक्टली शुद्ध ही हूँ, इस तरह सभी अंगों को लेकर शुद्ध ही हूँ, ऐसा विस्तार पूर्वक कहता है। सर्वांग अर्थात् सभी अंग, अंग-उपांग सभी को लेकर शुद्ध हूँ। अब किसी भी जगह पर अशुद्धता नहीं रही। वास्तव में शुद्ध ही हूँ। मुझ में कभी भी अशुद्धि आई ही नहीं। सर्वांग शुद्ध हूँ। सभी अंगों को लेकर शुद्ध हूँ। मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ और सर्वांग

शुद्ध हूँ, मुझे कुछ स्पर्श नहीं करता। तब लोग पूछेंगे, 'यह सबकुछ देखते-करते हो, तो आपको कर्मबंधन नहीं होता?' तब कहता है, 'नहीं भाई, मुझे तो कोई भी कर्मबंधन नहीं होता।'

प्रश्नकर्ता : इसी तरह अपने आपमें सभी द्रव्य सर्वांग रूप से शुद्ध ही है न?

दादाश्री : ये सभी द्रव्य शुद्ध ही हैं।

प्रश्नकर्ता : 'द्रव्य से मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ।' द्रव्य से अर्थात् क्या समझना है?

दादाश्री : द्रव्य को लोग क्या समझते हैं? लोग पैसों को द्रव्य समझते हैं। वास्तव में द्रव्य को वस्तु कहा जाता हैं। तत्त्व कहा जाता है। अर्थात् तत्त्व को लेकर मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ। तत्त्व को द्रव्य कहते हैं। क्या है? तत्त्व को द्रव्य कहते हैं अत: तत्त्व को लेकर मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ। फिर चाहे वस्तु कहो या तत्त्व कहो लेकिन वस्तु को लेकर मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ।

तकलीफ में भी चिंता न हो वह शुद्धत्व का लक्षण

प्रश्नकर्ता : 'अनंत ज्ञेयों को जानने में परिणामित हुई अनंत अवस्थाओं में मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ, सर्वांग शुद्ध हूँ।' 'जब हम ऐसा बोलते हैं तब आंतरिक परिणाम कैसे होने चाहिए?'

दादाश्री : कुछ भी परिणाम नहीं होने चाहिए, उन्हें जानना चाहिए। 'इतनी सारी जानने की चीज़ें होने के बावजूद भी, उन्हें जानता हूँ फिर भी मेरी शुद्धता नहीं बिगड़ती,' ऐसा कहना चाहते हैं। गटर को देखता हूँ और जानता हूँ फिर भी मेरा कुछ नहीं बिगड़ता और इत्र को भी देखता हूँ और जानता हूँ, अन्य सबकुछ करता हूँ, खराब या अच्छा देखता हूँ लेकिन उससे मेरा यह ज्ञान उसमें एकाकार नहीं हो जाता। अत: लोग उलझन में पड़ जाते हैं कि इसे देखने से भीतर आत्मा बिगड़ गया।

प्रश्नकर्ता : 'द्रव्य, गुण व पर्यायों से संपूर्ण शुद्ध हूँ', सर्वांग शुद्ध हूँ, तो यह द्रव्य से, गुण से और पर्याय से उसका शुद्धत्व कैसे समझ में आएगा? और ऐसा बोलने का बाहर फल आया है, उसका कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : यदि चिंता नहीं होगी। *उपाधि* (बाहर से आने वाले दु:ख) के परिणाम आने पर भी चिंता नहीं हो तब उससे पता चल जाता है। पास होने पर पता नहीं चलेगा कि भाई, अच्छा लिखा होगा! और यदि बार-बार पूछे तब कहेंगे, 'भाई, मार्क देख आओ मेरे।'

यह तो केवलज्ञान का वाक्य

'अनंत ज्ञेयों को जानने में परिणामित..' इस वाक्य का अर्थ निकालना हो तब भी समझ में नहीं आता। वे क्या कहना चाहते हैं, वह भी समझ में नहीं आता। आपको आत्मा प्राप्त हो गया न? *लक्ष* में (जागृति में) बैठ गया है न? फिर इससे ज़्यादा और क्या चाहिए? और वह आत्मा उसके खुद के गुणधर्मों सहित है ही!

अब संसार वहाँ तक कैसे पहुँच पाएगा? समकित् तक तो पहुँच नहीं पाता। केवलज्ञान स्वरूपी आत्मा दिया है। यह जो वाक्य है यही केवलज्ञान स्वरूप (तक पहुँचता) है। 'अनंत ज्ञेयों को जानने में परिणामित हुई अनंत अवस्थाओं में मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ।' यह केवलज्ञान के लेवल का वाक्य है। यदि द्रव्य, गुण और पर्याय से समझे तो पूरा ही केवलज्ञान समझ में आ गया।

'अनंत ज्ञेयों को जानने में....' हमारे इस वाक्य में इतना अधिक बल है कि इसे बोलते ही खुद फुल (संपूर्ण) केवलज्ञान स्वरूप बन जाता है। यह वाक्य समझने में बहुत कठिन है लेकिन इसे बोलने

पर फुल केवलज्ञान स्वरूप बन जाता है। जैसे यदि कोई करेले का नाम नहीं जानता हो लेकिन यदि उसकी सब्ज़ी खाए तो स्वाद् तो आ जाएगा न?

चंदूभाई बोलने वाले, 'आप' देखने वाले

अब, सभी आँखें बंद करके 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ' ऐसा पच्चीस बार नहीं, सौ बार बोल सको तो बोलना। वहाँ से शुरू करो, पहले बोलो...

प्रश्नकर्ता : मन में ही बोलना है न?

दादाश्री : मन में ही बोलना है। लेकिन पहले क्या बोलना है, कि 'मैं चंदूभाई, मन-वचन-काया का योग, द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म से भिन्न हे प्रकट शुद्धत्मा भगवान! मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, वह कौन है? मैं कल बुलवा रहा था और आप बोल रहे थे। आज आप बुलवाओ और चंदूभाई बोलेंग। कौन बुलवाएगा? 'आप' देखने वाले और बोलने वाले यह चंदूभाई। चलो, अब शुरू कर दो।

अनंत दर्शन, इसलिए देख सकता है अनंत दृश्यों को

प्रश्नकर्ता : अनंत दर्शन अर्थात् क्या?

दादाश्री : ऐसा है न, दृश्य कितने हैं? उन्हें गिन सकते हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : दृश्य अनंत हैं, इसलिए दर्शन भी अनंत हैं। यदि दृश्य अनंत हों और दर्शन अनंत नहीं हों तो क्या दशा होगी? दृश्य अनंत हों और हमें थोड़ा सा ही दर्शन में आए तो कैसे चलेगा? उन्हें देख पाएँगे? दृष्टा के दर्शन कितने? तब कहेंगे, 'अनंत दर्शन हैं।'

प्रश्नकर्ता : इस तरफ अनंत दर्शन हैं, अनंत ज्ञान है और बीच में ज्ञानावरण है, दर्शनावरण है, उनके बारे में बताइए। दर्शनावरण किसे कहते हैं?

दादाश्री : इस संसार में सभी लोगों में दर्शन का आवरण है, मिथ्यात्व का। सम्यक् दर्शन का जो आवरण है, उसे मिथ्यात्व कहते हैं। जब सम्यक् ज्ञान पर मिथ्याज्ञान का आवरण हो तब उसे ज्ञानावरण कहते हैं।

अन्डिसाइडेड यानी दर्शन, डिसाइडेड यानी ज्ञान

प्रश्नकर्ता : ज्ञेय अनेक प्रकार के होने से उनके सामने मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ। दृश्य अनेक प्रकार के होने से उनके सामने मैं अनंत दर्शन वाला हूँ। ज्ञेयों और दृश्यों में क्या अंतर है उसे समझाने की कृपा करेंगे।

दादाश्री : ज्ञान और दर्शन में भिन्नता का गुण है। तय होने से पहले दर्शन और तय होने के बाद ज्ञान।

दर्शन अर्थात् क्या? अंधेरे में किसी जगह पर आप पाँच-छः लोग बैठे हों और बगीचे में कुछ आवाज़ सुनाई दे तो आप छः-सात लोगों में से कोई एक बोल उठेगा, 'अरे कुछ है!' लोग ऐसा कहते हैं या नहीं, आवाज़ आए तब? तब दूसरा कहता 'हाँ, कुछ है!' फिर सभी कहने लगते हैं, 'हाँ, कुछ है!' तब मेरे जैसे किसी ने पूछा, 'लेकिन क्या है कहो न?' तब कहता है, 'वह तो कैसे पता चले? कुछ है तो सही।' वह 'कुछ है' वह जो ज्ञान हुआ, उसे दर्शन कहते हैं। देखो तीर्थंकर कितने सयाने थे। नहीं? इसे दर्शन में रखा।

अब वे सभी उठकर गए, यह देखने के लिए कि क्या है और वहाँ जाकर एक व्यक्ति कहता है, 'अरे! यह तो गाय है।' तब दूसरा कहता, 'हाँ, गाय है।' तब उसे ज्ञान कहते हैं। 'कुछ है' उसे दर्शन और 'यह है' उसे ज्ञान। 'गाय है' उसे ज्ञान कहते हैं। डिसाइडेड हुआ। जो डिसाइडेड हुआ,

वह ज्ञान कहलाता है और जो अन्डिसाइडेड है, वह दर्शन कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : उसके बाद उन संयोगो में गाय ज्ञेय बन जाता है न?

दादाश्री : हाँ, गाय ज्ञेय है, पहले दृश्य थी।

दृष्टा ने दृश्य को देखा तो दर्शन हुआ। ज्ञाता ने ज्ञेय को जाना तो ज्ञान हुआ।

उलझन में सहारा दर्शन का

खुद परमात्मा है फिर कब तक छुपे रहना है? खुद के ही घर में भरपूर माल है, वह माल भी, अनंत ज्ञान व दर्शन-शक्ति, अनंत सुख है उसके बावजूद भी यदि उसका उपयोग नहीं करे तो किसका दोष? भरा हुआ माल तो फल देकर जाएगा। जब ज्ञान है और सूझ है तो फिर सफोकेशन (घुटन) क्यों?

अत: जो उपाय बताए हैं, वे सारे उपाय करने पड़ेंगे। वे लिखे हैं। उसमें मैंने कौन से उपाय बताए हैं, उन्हें पढ़ो ज़रा!

प्रश्नकर्ता : जब कोई भी सफोकेशन होने लगे, सूझ न पड़े, दखलंदाज़ी या ऐसा कुछ हो, उस समय 'मैं अनंत दर्शन वाला हूँ, मैं अनंत दर्शन वाला हूँ, मैं अनंत दर्शन वाला हूँ' ऐसे पाँच-पच्चीस बार बोलो तो तुरंत ही सूझ पड़ने लगेगी कि इसका हल कैसे लाना है।

दादाश्री : हाँ, अतिशय उलझन में किसका सहारा? दर्शन का। 'मैं अनंत दर्शन वाला हूँ, मैं अनंत दर्शन वाला हूँ' पाँच-पच्चीस-पचास बार बोल लेना, दादा की फोटो को सामने रखकर। तो फिर तुरंत ही सूझ पड़ जाएगी, तुरंत ही।

उलझन होने लगे तब 'अनंत दर्शन वाला हूँ, अनंत दर्शन वाला हूँ' बोलेंगे तो सारी उलझनें निकल जाएगी।

स्व-गुणों को भजते ही हट जाते हैं आवरण

प्रश्नकर्ता : जब कोई भी प्रॉब्लम हो और समझ नहीं पड़े, जब बुद्धि व्यवहार में भ्रमित करे, कहीं ऐसा व्यवहारिक प्रसंग आ जाए और उसमें समझ न आए तब 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, अनंत ज्ञान वाला हूँ। मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ।' ऐसा ज़ोर-ज़ोर से बोलने पर सारे परमाणु निकल जाते हैं और एकदम से सूझ पड़ने लगती है, तुरंत ही, उसी समय।

दादाश्री : कोई आवरण आ गया हो तो, वह उड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : सभी बादल हटते जाते हैं?

दादाश्री : खुद के सभी गुण को बोलने चाहिए। वे स्वाभाविक गुण हैं। 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ,' 'मैं अनंत दर्शन वाला हूँ' ऐसा पच्चीस-पचास बार बोलना चाहिए। रोज़ इन सभी गुणों को बोलने का अभ्यास करना चाहिए।

ज्ञान व दर्शन गुणों से खुद शुद्ध

प्रश्नकर्ता : आत्मा के अनंत गुण हैं या फिर ये जो ज्ञान और दर्शन हैं, उनके अनंत गुण हैं?

दादाश्री : नहीं, आत्मा के। ज्ञान व दर्शन बड़े गुण हैं अर्थात् 'ज्ञान, दर्शन आदि अनंत गुणों से' ऐसे दूसरे अनंत गुणों से मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ, सर्वांग शुद्ध हूँ।

प्रश्नकर्ता : उसका उदाहरण क्या है?

दादाश्री : यह प्रकाश है इसके जैसा। यहाँ बाहर सभी जगह प्रकाश है, यदि यहाँ पर हरे रंग का काँच रखें, पीला रखें, तो नीचे हरा व पीला प्रकाश दिखाई देगा। फिर भी वह कहता है, कि 'मैं शुद्ध ही हूँ।' यह तो हरे, पीले के कारण सभी रंग बदल गए हैं, बाकी मैं तो खुद

शुद्ध ही हूँ। इसी तरह से आत्मा शुद्ध ही है। तरह-तरह की सब प्लेटें(आवरण) आ जाती हैं इसलिए उल्टा दिखाई देता है, उसके बावजूद भी खुद शुद्ध है।

मेरे खुद के गुणधर्म अर्थात् ज्ञान, दर्शनादि अनंत गुणों से भी मैं संपूर्ण शुद्ध हूँ, सर्वांग शुद्ध हूँ। 'गुणों को लेकर भी मैं शुद्ध हूँ,' ऐसा कहना चाहते हैं। तत्त्व से शुद्ध है ही। वे गुण जो उसके खुद के भीतर रहे हुए हैं, उन गुणों सहित खुद शुद्ध ही है। हाँ, उन गुणों से भी शुद्ध है और यह भी शुद्ध है।

गुण अर्थात् ज्ञान व दर्शन, ऐसे अनंत गुण। ज्ञान, दर्शन व चारित्र, शक्ति, वीर्य। फिर आनंद-वानंद सभी बहुत से गुण हैं, उन सभी गुणों से शुद्ध हूँ।

आत्मा का मुख्य स्वभाव ज्ञाता-दृष्टा

आत्मा का मुख्य स्वभाव क्या? ज्ञाता-दृष्टा और परमानंद! बाकी तो अपार गुण है लेकिन ज्ञाता-दृष्टा मुख्य हैं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञाता-दृष्टा भाव के साथ परमानंद भी रहता है क्या?

दादाश्री : परमानंद ही रहता है, निरंतर परमानंद। हमें छब्बीस सालों से टेन्शन नहीं हुआ है, एक सेकन्ड भी नहीं। गाली दे, चाँटा मारे, जेल में ले जाए, तब भी हमें टेन्शन नहीं होगा। वह शक्ति आप में भी है। सिर्फ उस शक्ति का विकास करने की ज़रूरत है। जो सामान मुझ में है, वही सामान आप में है। ज्ञाता-दृष्टा पद के बिना भ्रांति है। हाँ, जब ज्ञाता-दृष्टा नहीं रहते, तब फिर भ्रांति उत्पन्न हो जाती है। ज्ञाता-दृष्टा अर्थात् जिन्हें सभी चीज़ें ज्ञेय दिखाई देती हैं इसीलिए ज्ञाता-दृष्टा में रहना। जो खुद निरंतर ज्ञाता-दृष्टा पद में रहते हैं वे ज्ञानी हैं।

उसे कहते हैं स्व-सत्ता

प्रश्नकर्ता : 'प्रति क्षण स्व-सत्ता में रहकर स्व-सत्ता का ही उपभोग करूँ', तो स्व-सत्ता तो आपने दी ही है, इसका उपयोग कैसे करूँ? और, 'पर-सत्ता में प्रवेश न करूँ', तो वह किस प्रकार से? यह विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : तमाम क्रियाएँ पर-सत्ता हैं। क्रियामात्र और क्रिया वाला ज्ञान भी पर-सत्ता है। जो ज्ञान अक्रिय है, ज्ञाता-दृष्टा और परमानंदी है, जो इस सारे क्रिया वाले ज्ञान को जानता है, वह अपनी स्व-सत्ता है और वही 'शुद्धात्मा' है।

प्रश्नकर्ता : सांसारिक लोगों को स्व-सत्ता का उपयोग किस तरह से करना चाहिए?

दादाश्री : ज्ञाता-दृष्टा और परमानंदी रहना चाहिए। मन-वचन-काया स्वभाव से ही 'इफेक्टिव' हैं। सर्दी का 'इफेक्ट' होता है, गर्मी का इफेक्ट होता है, आँखें कुछ खराब देखें तो घिन होती है, कान कुछ खराब सुनें तो असर हो जाता है। तो इन सब 'इफेक्ट्स' को हमें जानना है। यह सब 'फॉरेन डिपार्टमेन्ट' का है और अपना 'होम डिपार्टमेन्ट' है।

ज्ञेय अनंत प्रकार के होने से उनके सामने मैं अनंत ज्ञान वाला ज्ञाता हूँ। दृश्य अनंत प्रकार के होने से उनके सामने में मैं अनंत दर्शन वाला दृष्टा हूँ। मैं अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य वाला शुद्धात्मा हूँ। मैं अनंत ज्ञानक्रिया, दर्शनक्रिया और शक्ति क्रिया वाला शुद्धत्मा हूँ।

आत्मा अनंत शक्ति का भंडार

दुनिया में जितने भी जीव हैं, उन सभी जीवों में जितनी शक्तियाँ हैं, वे सारी शक्तियाँ एक ही आत्मा में हैं। आत्मा की जो शक्तियाँ हैं, वैसी शक्तियाँ किसी दूसरी चीज़ में नहीं हैं, इतनी अधिक शक्तियाँ हैं।

आत्मा में इतनी अधिक शक्ति है कि दीवार में प्रतिष्ठा करे तो दीवार बोलने लगे!

पूरे ब्रह्मांड को जानने की, अनुभव करने की, ऐसी अनंत शक्तियाँ हैं।

आत्मशक्ति की लंबाई का कोई पार ही नहीं है! हर एक इंसान के विचारों को 'एक्सेप्ट' कर सके, उतनी लंबाई है। चोर चोरी करे, उसे भी 'एक्सेप्ट' करता है, दानी दान दे, उसे भी 'एक्सेप्ट' करता है, सबकुछ 'एक्सेप्ट' करता है, ऐसी है वह आत्मशक्ति, परमात्म शक्ति है और वही आत्मा है!

आत्मा की अनंत शक्ति है। आत्मा तो आपकी भूल (दिखाता है), उसकी भी भूल निकालता है और उसकी भूल की भूल निकलने की भी भूल निकालता है। अंतिम भूल से भी रहित है आत्मा।

इस आत्मा की शक्ति ऐसी है कि हर बार कैसे वर्तन करें, वे सारे उपाय बता देता है और फिर उन उपाय को भी भूलतें नहीं हैं, आत्मा प्रकट होने के बाद।

ओहोहोहो! अनंत गुण हैं, अनंत शक्ति है! खुद को अनुभव होता है। इसमें दूसरा कुछ नहीं करना पड़ता क्योंकि पौद्गलिक शक्तियाँ इतनी दुःखदाई हैं या दुःख देती हैं। उन सभी को यह स्पर्श नहीं करने देती। पानी में रहने के बावजूद भी पानी का स्पर्श नहीं होने देती तो कितनी शक्ति वाला है! इन सब से निर्लेप रख सकता है, असंग ही रख सकता है। संपूर्ण रूप से संग में रहने के बावजूद भी, भीड़ में रहने के बावजूद भी असंग रह सकता है। ऐसी कितनी शक्तियाँ हैं खुद की! ये तो खुली शक्तियाँ हैं, अन्य तो ऐसी सब शक्तियाँ, जिनका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता उन सब को मैं जानता हूँ। उनका वर्णन मैं आपसे कैसे करूँ?

प्रश्नकर्ता : इसीलिए आत्मा को सर्व शक्तिमान कहा है?

दादाश्री : इसीलिए वह भगवान है, वह कोई ऐसा-वैसा नहीं है! कोई भी चीज़ उसे डरा नहीं सकती। कोई भी चीज़ उसे डिप्रेशन नहीं ला सकती। कोई भी उसे दुःखी नहीं कर सकता! कितनी अनंत शक्ति!

अपरंपार शक्ति है। अगर एटम् बम गिरने वाला हो फिर भी पेट में पानी न हिले, इतनी शक्ति है अंदर!

आत्मा की खुमारी ही ज़बरदस्त है! पूरे संसार के बम गिरें तब भी न हिले ऐसी है आत्मा की खुमारी है।

प्रश्नकर्ता : आप जिन्हें भगवान कहते हैं, ये वे भगवान!

दादाश्री : हाँ, उनके पास अनंत शक्तियाँ हैं। वे शक्ति के रूप में तो प्रत्येक जीव में हैं। हर तरह की शक्तियाँ, फिर उसमें क्या बाकी रहेगा? लेकिन इनमें ऐसी भौतिक शक्तियाँ नहीं हैं। इनमें सारी आध्यात्मिक, वास्तविक शक्तियाँ हैं।

आत्मा में गज़ब की शक्तियाँ हैं! यहाँ बैठे-बैठे पूरा ब्रह्मांड दिखाई दे, ऐसा है। भीतर अनंत शक्तियों का भंडार है। एक उँगली पर पूरे ब्रह्मांड का भार उठा सके ऐसा है लेकिन जब प्रकट होती हैं, तभी काम आती हैं।

प्रत्यक्ष आनंद, परमानंद, राग-द्वेष रहितता, क्रोध-मान-माया और लोभ की निर्बलता से रहित। किसी भी प्रकार की कमज़ोरी नहीं रहे। किसी भी तरह की बोदरेशन (मानसिक उपाधि) को तोड़ दे। सभी प्रकार की डिफिकल्टी (आपत्तियाँ) को तोड़ दे। किसी भी डिफिकल्टी को तोड़कर मोक्ष में आगे ले जा सके, ऐसी अनंत शक्तियों का धनी हैं

प्रश्नकर्ता : वे जो अनंत शक्तियाँ हैं, क्या वह तीर्थंकरों के अलावा अन्य किसी को दिखाई देती हैं? तीर्थंकरों के अलावा किसी और को समझ में आ सकती हैं?

दादाश्री : नही, किसी और को पूर्ण रूप से समझ में नहीं आ सकती।

कल्पशक्ति से उत्पन्न हुआ संसार

प्रश्नकर्ता : आत्मा में अन्य कौन सी शक्तियाँ हैं?

दादाश्री : आत्मा में अनंत शक्तियाँ हैं, उसमें कल्प नाम की एक शक्ति है। कल्प वह खुद है, उसमें से वह विकल्पी बनता है और जब वह निर्विकल्पी बनता है तब कल्प बनता है।

हमें ज्ञानी पुरुष (खुद का स्वरूप) दिखा देते हैं, उसके बाद आत्मा की अनंत कल्पवृक्षी शक्तियाँ खिल जाती हैं। अभी तो अज्ञान दशा में शक्तियाँ भी नहीं खिलतीं। बल्कि सारी शक्तियाँ खत्म होने लगी हैं। भीतर जो शक्तियाँ हैं और समता है, वह भी चली जाती है।

अनंत शक्तियाँ हैं, उनकी विपरीत स्फुरणा (प्रेरणा) से इतना बड़ा ब्रह्मांड उत्पन्न हो गया है, टेढ़ी तरफ वाला, तो सम्यक् स्फुरणा से क्या नहीं हो सकता? जैसी स्फुरणा करते हैं, वैसा ही हो जाता है। वह व्यर्थ नहीं जाती। सिर्फ निश्चय करने की ही ज़रूरत है।

जैसी कल्पना करते हैं न, वैसा बन जाता है। 'मैं लेफ्टिनेन्ट हूँ' कहने से वैसा बन जाता है। 'मैं अज्ञानी हूँ' कहने से वैसा बन जाता है। 'मैं क्रोधी हूँ' कहने से वैसा बन जाता है। और 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' बोलते रहेंगे तो उस समय क्या होगा? अनंत शक्ति वाला बन जाएगा।

उसके बावजूद पापड़ को तोड़ने की भी शक्ति नहीं है

प्रश्नकर्ता : आत्मा की शक्ति और शारीरिक शक्ति में कोई संबंध है क्या?

दादाश्री : इन दोनों की शक्तियाँ अलग ही हैं।

प्रश्नकर्ता : वे दोनों एक-दूसरे पर असर डालते हैं?

दादाश्री : डालते ही हैं न! इस शारीरिक शक्ति के कारण ही आत्मा की शक्ति बंद हो जाती है। यदि शारीरिक शक्ति अधिक हो तो पाशवता बढ़ती है।

प्रश्नकर्ता : यदि आत्मा की शक्ति अधिक हो तो?

दादाश्री : पाशवता कम होती है और मनुष्यपन उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आत्मा की शक्ति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को क्या प्रयत्न करने चाहिए?

दादाश्री : अंदर आत्मा की शक्ति है ही। आत्मा की शक्ति तो परमात्मापन की शक्ति है। बाकी, उस परमात्मा में एक सेका हुआ पापड़ तोड़ने की भी शक्ति नहीं है और यों वे अनंत शक्तियों के मालिक हैं!

प्रश्नकर्ता : हं, पापड़ तोड़ने की भी शक्ति नहीं है लेकिन एक ओर आप ऐसा कहते हैं कि आत्मा में अनंत शक्ति है, अर्थात् दो शक्तियाँ हुई?

दादाश्री : हाँ, शक्तियाँ दो प्रकार की हैं। एक शक्ति, ज्ञान व दर्शन है, उसमें *लागणी* (लगाव) होती है और दूसरी है कार्यशक्ति, उसमें *लागणी* नहीं होती। वह जो अनंत शक्ति है, वह

यह शक्ति है, खुद की शक्तियाँ तो अपार हैं लेकिन ऐसी शक्तियाँ नहीं हैं। वहाँ तो कहते हैं कि 'मैं पहुँचा, वह मेरी शक्ति है यह तो।' अरे, यह तेरी शक्ति है ही नहीं, यह तो रिज़ल्ट है।

नहीं है वह मिकेनिकल शक्ति

प्रश्नकर्ता : यदि आत्मा-परमात्मा कुछ नहीं कर सकता तो हम उसे 'अनंत शक्ति वाला' क्यों कहते हैं?

दादाश्री : अनंत शक्ति वाला आत्मा-परमात्मा है लेकिन जैसा आप मानते हो, उसमें वैसी मिकेनिकल शक्ति नहीं है। मिकेनिकल शक्ति तो पावर से उत्पन्न हुई है और ये सारी मिकेनिकल शक्तियाँ हैं। आप भीतर खाने का डालते हो, तो यह मशीन चलती है। यदि खाने का न डालो, हवा न डालो तो मशीन बंद हो जाती है।

शक्तियाँ दो प्रकार की हैं, एक तो मशीन बनाने वाली शक्ति और (दूसरा) यह (आत्मा) कुछ नहीं करता और शक्ति अपार है! ईश्वर की शक्ति अपार है लेकिन वह कुछ करती नहीं है। उनकी उपस्थिति से सब चलता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, यदि आत्मा अक्रिय है तो फिर उसमें इतनी शक्ति आई कहाँ से?

दादाश्री : आत्मा अनंत शक्ति का धनी है। वह अक्रिय है इसलिए ऐसी क्रियाएँ नहीं करता। ये मेहनत की क्रियाएँ मिकेनिकल हैं, वह मिकेनिकल क्रियाएँ नहीं करता लेकिन उसकी ज्ञानक्रिया ज़बरदस्त होती है, दर्शनक्रिया ज़बरदस्त होती है। अनंत ज़बरदस्त शक्तियों का मालिक है! मिकेनिकल शक्ति नहीं है। यह मशीन चलती है और यह सब लेने-देने के लिए जो मिकेनिकल शक्तियाँ हैं, वे सारी *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) की शक्तियाँ हैं, परमाणुओं की शक्तियाँ हैं।

आत्मा में चलने की शक्ति नहीं है, बोलने की शक्ति नहीं है। आत्मा में जो शक्ति है, यदि लोग उसका एक भी अंश जान जाते, तो क्या लोगों का कल्याण नहीं हो जाता?

पुद्गल की शक्ति ने भगवान को भी उलझाया

प्रश्नकर्ता : आत्मा की शक्ति और *पुद्गल* की शक्ति में क्या अंतर है?

दादाश्री : *पुद्गल* में भी अनंत शक्ति है। वह रूपी है और सक्रिय है। *पुद्गल* कुछ कम नहीं है। *पुद्गल* ने ही भगवान को रोका है और अंदर उससे भगवान उलझन में पड़ गए! जैसे मकड़ी खुद के आसपास जाला बुनती है, फिर वह मकड़ी जाल तैयार करती है और फिर उसी में उलझ जाती है, वैसी स्थिति है। यह *पुद्गल* की करामात है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि *पुद्गल* और आत्मा दोनों की अनंत शक्तियाँ हैं और साथ ही यह भी समझाया कि दोनों की शक्तियाँ अनोखी यानी निराली है, एक-दूसरे के साथ उनका कोई लेना-देना नहीं है तो फिर *पुद्गल* ने भगवान को कैसे रोका?

दादाश्री : *पुद्गल* में 'मैं ही हूँ' ऐसा मानता था इसलिए उसकी शक्ति *पुद्गल* में घुस गई और वह *पुद्गल* शक्ति वाला बना गया। जब से 'मैं आत्मा हूँ' का *लक्ष* (जागृति) बैठा, तभी से वह *पुद्गल* से अलग हो गया लेकिन शक्तिशाली बने *पुद्गल* को नरम होने में समय लगता है और अलग हुए आत्मा को पूर्ण रूप तक पहुँचने में भी टाइम लगता है।

जीवमात्र में अनंत शक्ति लेकिन आवृत

प्रश्नकर्ता : प्रत्येक जीव को ऐसी शक्ति अपने आप मिल जाती हैं क्या?

दादाश्री : हाँ, सभी मिलती हैं। अंदर बहुत सी शक्तियाँ हैं। अंदर बहुत सी शक्तियाँ पड़ी हुई हैं, लेकिन क्या करें? आवरण में आ गई हैं। ऊपर आवरण चढ़ गए हैं। जैसे एक मटके में बड़ा पाँच सौ वाट का बल्ब रखा हुआ हो लेकिन अगर मटके को ऊपर से ढक दिया जाए तो क्या रहेगा? उसी तरह यह लाइट सभी में है, फर्स्ट क्लास।

आत्मा की शक्तियाँ स्वाधीन हैं लेकिन आवृत हैं इसलिए काम में नहीं आतीं। घर में गड़े हीरे का किसे पता चलेगा? लेकिन हीरे की शक्ति हीरे में पड़ी हुई है अर्थात् आत्मा की इतनी अधिक शक्तियाँ आवरण में पड़ी हुई हैं। पूरे ब्रह्मांड को हिला दे, डिगा दे, ऐसी शक्तियाँ हैं।

लोकसंज्ञा से आवरण में आई अनंत शक्ति

प्रश्नकर्ता : आवरण हटने से तो अनंत शक्तियाँ प्रकट हो जाएँगी तो उस आवरण के विषय में ज़रा विस्तार से समझाइए?

दादाश्री : स्वरूप के अज्ञान को ही मोह का आवरण कहते हैं। आत्मा तो अनंत शक्ति का धारक है लेकिन आवरण निकालना है। स्वरूप का अज्ञान है और स्वरूप का अदर्शन है, ये दो ही सब से बड़े आवरण हैं।

हर एक जीव में, गधे में, कुत्ते में और गुलाब के पौधें में भी आत्मा की अनंत शक्तियाँ हैं लेकिन वे आवृत हैं इसलिए वे फल नहीं देतीं। जितनी प्रकट हुई हों, उतना ही फल देती हैं। इगोइज़म और ममता के चले जाने पर वे शक्तियाँ व्यक्त होंगी।

आत्मा की चैतन्य शक्ति किससे आवृत है? यह चाहिए और वह चाहिए। लोगों को जो चाहिए था, उनका वह देख-देखकर हम भी वह ज्ञान सीख गए। इसके बगैर तो नहीं चलेगा। मेथी की भाजी के बगैर नहीं चलेगा, ऐसा करते-करते फँस गए! अनंत शक्ति वाले पर पत्थर डालते रहे! आत्मा की अनंत शक्तियाँ हैं लेकिन इस जगत् में घर्षण और संघर्षण से ही सारी शक्तियाँ खत्म हो जाती हैं।

महात्माओं में ऐसे प्रकट होती हैं अनंत शक्तियाँ

आत्मा में अनंत शक्तियाँ हैं। वे शक्तियाँ संसार के सभी लोगों में हैं लेकिन अव्यक्त हैं। आपमें मैंने व्यक्त कर दी हैं। हमारी संपूर्ण शक्तियाँ व्यक्त हो चुकी हैं इसलिए हम व्यक्त आत्मा हैं। आप सब में कुछ अंशों तक व्यक्त होती जा रही हैं।

आत्मा की शक्तियाँ व्यक्त हो जाएँ, तो फिर बाहर की कोई झंझट नहीं करनी पड़ेगी। सिर्फ भीतर विचार आते ही बाहर अपने आप वैसा ही हो जाता है। 'व्यवस्थित' सबकुछ कर देता है। आत्मा का वैभव तो राजा से भी बहुत उच्च प्रकार का है! यह तो भगवान पद है!

प्रश्नकर्ता : महात्माओं में आत्म शक्तियाँ किस तरह से प्रकट होंगी?

दादाश्री : खुद अनंत शक्ति वाला है ही! आत्मा बनकर 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' बोलने से वे शक्तियाँ प्रकट होती जाएँगी। 'ज्ञानी पुरुष' रास्ता दिखाते हैं उस रास्ते पर चल कर छूट जाओ, वर्ना नहीं छूट पाओगे। इसलिए जैसा बताए उस रास्ते पर चलकर छूट जाना।

सेल्फ को रियलाइज़ करने से अनंत शक्ति बढ़ी हैं, ज़बरदस्ती शक्तियाँ प्रकट हो गई हैं।

आत्मा अर्थात् अनंत शक्तिवान, अब इस पर से जितने आवरण हटेंगे उतनी शक्तियाँ खिलती जाएँगी, बाहर, प्रकट होती जाएँगी।

प्रश्नकर्ता : आवरण हटने के बाद उस

आवरण के पीछे जो आवरण रहा हुआ है, वही कार्य करता है?

दादाश्री : कोई कार्य नहीं करता। स्वभाव बताता है हर एक का। यदि कार्य कर रहा होता तब तो वहाँ वह करने वाला बन जाता। वह अपना स्वभाव बताता है, अनंत शक्ति वाला।

अत: धीरे-धीरे अपने महात्माओं में शक्तियाँ आएँगी! यह आंतरिक शक्ति उत्पन्न हुई है उनमें। जैसे-जैसे बाह्यसुख, बाह्यशक्तियाँ बाहर प्रकट होती जाएँगी वैसे-वैसे ये लोग स्वीकार करेंगे। वर्ना वे स्वीकार क्यों करेंगे? यदि बाह्य शक्तियाँ प्रकट नहीं होंगी, तो कैसे एक्सेप्ट करेंगे?

अनंत शक्ति का उपयोग करो छूटने के लिए

भगवान तो भगवान ही हैं! अनंत गुण हैं! अनंत सुख हैं! अनंत ज्ञान हैं! अनंत दर्शन हैं! अनंत शक्तियाँ हैं उनके पास! भगवान के पास यदि इतनी अनंत शक्तियाँ न होतीं तो यह मोक्ष नहीं जाने देती। यह जो अनात्मा की माया है, वह भगवान के बाप को भी मोक्ष में नहीं जाने दे! लेकिन भगवान भी अनंत शक्ति वाले हैं न!

पुद्गल अनंत शक्ति वाला है, उसे हटाकर वह खुद बाहर निकल जाता है। अनंत प्रकार की परेशानियाँ आने पर भी अंत तक पहुँच जाए, ऐसी अनंत शक्ति वाला है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा की जो अनंत शक्तियाँ हैं, वे अनंत शक्तियाँ इस संसार में से छूटने के लिए ही हैं?

दादाश्री : इसमें से छूट पाना असंभव है। इसमें से छूट पाना असंभव है इसलिए अनंत शक्ति के आधार पर ही छूट जाता है, वर्ना इसमें तो, जैसा इस जड ने बांधा है... आत्मा को किसने बांधा है? यह तो वेल्डिंग से काटने पर भी न काटा जा सके, ऐसा है। लोहा तो वेल्डिंग से कट जाता है लेकिन यह बंधन तो ऐसा है! हाँ, यह ऐसा अनंत है जो वेल्डिंग या किसी भी चीज़ से नहीं कट सकता। उसे तो सिर्फ ज्ञानी पुरुष ही काट सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो क्या अनंत शक्तियों का उपयोग इसे छुड़वाने के लिए ही करना है?

दादाश्री : छूटने के लिए ही सभी शक्तियों का उपयोग करना है। अनंत शक्तियों का उपयोग कब होगा? ज्ञानी पुरुष से मिलने के बाद जब वे आत्मा को अलग कर देते हैं, तब अनंत शक्तियों का उपयोग हो सकता है, वर्ना तब तक अनंत शक्तियाँ होती ही नहीं।

ज्ञाता-दृष्टा रहने से ही विघ्न नष्ट होते हैं

आत्मा की अनंत शक्तियाँ हैं। यदि उनका उल्टा उपयोग हो तो ऐसा भी कर सकती है और अगर सीधा उपयोग हो तो अपार आनंद उत्पन्न होता है। उल्टे उपयोग से ही तो यह पूरा संसार उत्पन्न हो गया है! सिद्ध भगवानों को तो निरंतर ज्ञाता-दृष्टा और परमानंद, निरंतर उसी में रहना है। उन्हें गज़ब का सुख रहा करता है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या उसका अर्थ ऐसा हुआ कि जो अनंत शक्तियाँ हैं, खुद को उनका उपयोग खुद के स्वभाव में रहने के लिए ही करना है, मोक्ष में जाते हुए?

दादाश्री : इसमें उल्टी शक्ति से संसार उत्पन्न हो गया है। अब सीधी शक्ति इतनी अधिक है कि जो सभी विघ्नों को तोड़ दे इसीलिए तो हम वह वाक्य बुलवाते हैं: 'मोक्ष जाते हुए विघ्न अनेक प्रकार के होने से उनके सामने मैं अनंत शक्ति वाला हूँ।' ज्ञाता-दृष्टा रहने से ही तमाम विघ्नों का नाश हो जाता है।

ज्ञाता-दृष्टा रहने से ही विघ्नों का नाश

हो सकता है, वर्ना नहीं हो सकता। अन्य कोई उपाय नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, विघ्न तो मर्यादित होते हैं न?

दादाश्री : विघ्न? हाँ, सब मर्यादित।

प्रश्नकर्ता : हाँ, इसलिए नाश हो जाता है कुछ समय बाद।

दादाश्री : हर एक के विघ्न उनकी अपनी शक्ति के अनुसार मर्यादित हैं लेकिन आत्मा की शक्तियाँ अनंत हैं। तो चाहे कितने भी विघ्न होंगे, वे उन्हें तोड़ देंगी।

वीतराग परमात्मा को शक्ति की क्या ज़रूरत

प्रश्नकर्ता : क्या आत्मा शुद्ध स्वरूप की शक्ति है? चेतना?

दादाश्री : एकदम शुद्ध आत्मा। मूल स्वरूप से परमात्मा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या वह एक शक्ति का स्वरूप है?

दादाश्री : परमात्मा में क्या-क्या नहीं होगा? वीतराग, निर्भय। निर्भय अर्थात् सबकुछ, उसके बाद तो किसी शक्ति की ज़रूरत ही नहीं रही न! निर्भय को शक्ति की ज़रूरत है क्या?

प्रश्नकर्ता : निर्भय होने के बाद उसे शक्ति की ज़रूरत नहीं रहती?

दादाश्री : नहीं-नहीं। अधिक शक्तिशाली को ही किसी का भय नहीं लगता न? निर्भय अर्थात् जिसे कभी भी भय न लगे। अनंत शक्तियों का धनी अर्थात् वह निर्भय, वीतराग, निरंतर परमानंदी, ऐसा आत्मा!

खुद को निरालंब लगना चाहिए। कोई भी चीज़ मुझे कुछ भी नहीं कर सकती, अगर उसके मन में ऐसा भान हो जाए तो कितनी शक्तियाँ उत्पन्न हो जाएँगी! शक्ति वाले को स्पर्श करने से परिवर्तन हो जाता है।

शुद्धात्मा भगवान, मुझे शक्ति दीजिए

आत्मा की तो अनंत शक्तियाँ हैं और जितनी तरफ शक्तियाँ ले जानी हों उतनी ले जाओ। उसे ले जाने वाला चाहिए। जितनी तरफ, करोड़ो तरफ ले जानी हो तो ले जा सकते हैं। ऐसा नहीं कि इतनी झंझट आ पड़ी है, अब क्या होगा? क्या होगा कहा तो क्या से क्या हो जाता है!

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ ऐसा हुआ कि वह आत्मा को मानता ही नहीं है। अंदर अनंत शक्ति वाला आत्मा बैठा है, तो उनसे शक्ति माँग न!

दादाश्री : हाँ आत्मा में अनंत शक्ति है, वहाँ से शक्ति माँग न! या तो आत्मरूप बन जा या फिर तू आत्मा से शक्ति माँग।

प्रश्नकर्ता : आत्मरूपी होने से पहले शक्ति माँगी जा सकती है क्या?

दादाश्री : हाँ, शक्ति तो माँग सकते हैं न!

प्रश्नकर्ता : आत्मरूपी नहीं हुआ हो, फिर भी शक्ति माँगी जा सकती है?

दादाश्री : माँगी जा सकती है न! हमें कहना है, 'हे शुद्धात्मा भगवान! आप अंदर बैठे हैं, आप मुझे शक्ति दीजिए।'

हमें तो ऐसा कहना है, 'हे दादा भगवान! आपकी साक्षी में मैं अनंत शक्ति वाला हूँ।' ऐसा बोलना। फिर देखना तो सही! कितनी ज़बरदस्त शक्ति रहेगी! क्या बोलना है? 'आपकी साक्षी में मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' ऐसा बोल सकते हो या नहीं? यह सिखलाता हूँ। यह बहुत अच्छी दवाई हैं। देखो न, भाई ने यह इलाज किया तो

उनका कितना अच्छा हो गया! आपको इलाज करने की भावना होती है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

शक्ति भरने से रिलेटिव हो जाता है शक्तिवान

आप शुद्धात्मा हो और अब ये देखते रहना है, कि चंदूभाई क्या कर रहे हैं। चंदूभाई की मदद करते रहना है। शुद्धात्मा में अनंत शक्ति है। अनंत शक्ति से चंदूभाई को देखते रहना है, चंदूभाई को शक्ति देते रहना है। जितनी माँगे उतनी शक्ति दे सकते हैं। शुद्धात्मा अनंत शक्ति वाला है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि चंदूभाई को शक्ति देते रहना है, उस बारे में ज़रा ज़्यादा समझाएँगे।

दादाश्री : आत्मा अनंत शक्ति वाला है। अब वह अपनी अनंत शक्ति रिलेटिव में डालेगा तो रिलेटिव में भी ज़बरदस्त शक्ति आएगी ही। आपको यदि और कुछ भी समझ में नहीं आए तो रिलेटिव में अविरोधाभास रहना अब। आपको ज्ञान दिया है इसलिए अगर कभी समझ में न आए, सूझ न पड़े तब 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, अनंत दर्शन वाला हूँ', ऐसा बोलना। यदि दर्शन कमज़ोर पड़े तो 'मैं अनंत दर्शन वाला हूँ'। जब देह की शक्ति कमज़ोर पड़े तब 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ।' जंगल मैं बाघ-भेड़िया या शेर मिल जाए तब 'मैं अमूर्त हूँ।' और शरीर को कोई बाधा-पीड़ा आए तब, 'मैं अगुरु-लघु स्वभाव वाला हूँ,' ऐसा बोलना। भीतर आत्मा की अनंत शक्तियाँ हैं। इतनी अधिक शक्तियाँ हैं कि बोलते ही परिणाम मिलता है।

अगर चंदूभाई कहें, 'बुढ़ापे के कारण यह नहीं हो सकता।' तब कहना, 'हम आपको शक्तियाँ देंगे।' तब वह कहे कि 'दो' तब हमें वापस बुलावाना है। 'बोलो, मैं अनंत शक्ति वाला हूँ।' हमारे बुलाने से, शक्ति अपने आत्मा में से उसमें जाएगी। वह उब जाए तो हमें करना ही पड़ेगा न! पड़ोसी है न!

अब तो जो बचा है, वह प्रतिष्ठित आत्मा है। अब प्रतिष्ठित आत्मा को ज़रा सा पुश ऑन करना पड़ेगा, शक्ति देनी पड़ेगी। हमें बुलवाना है कि 'अनंत शक्ति वाला हूँ' तो चल पड़ेगा।

कमज़ोरी में बोलना है, 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ'

प्रश्नकर्ता : ऐसा लगे कि मन का, देह का बल घट गया है, ऐसा लगे की शरीर की शक्ति क्षीण होने लगी है, उस समय 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ, मैं अनंत शक्ति वाला हूँ, मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' ज़ोर-ज़ोर से ऐसा बोलेंगे तो उस समय शरीर में वापस तुरंत शक्ति आ जाएगी।

दादाश्री : यदि बीमार हो, शारीरिक शक्ति कम हो जाए और मन व देह निर्बल हो जाएँ तब 'अनंत शक्ति वाला हूँ', बोलोगे तब भी शक्ति आ जाएगी।

अब ये जो महात्मा आते हैं न, उनके पिताश्री बयासी साल के हैं, उन्हें फिर जब सीढ़ियाँ चढ़नी हो तो, उनसे अपने आप नहीं चढ़ा जाता। दो लोग पकड़कर चढ़ाते हैं और जब यहाँ चढ़ने लगे तब फिर मैंने कहा कि, 'भाई ऊपर से दो लोग आ रहे हैं। आप जल्दी मत करना, बैठे रहना।' लेकिन वे तो, 'अनंत शक्ति वाला हूँ, बोले।' 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' ज़ोर से बोले न, तो कुछ देर में तीन सीढ़ियाँ (तीसरी मंज़िल) तो चढ़ गए। है न, शक्ति बेहिसाब! लेकिन फिर ऐसा भी कहते हैं कि 'अब मेरा बुढ़ापा आ गया है इसलिए मुझसे कुछ भी नहीं हो पाता।' ऐसा कहने पर फिर वैसा ही हो जाता है। अभी बुढ़ापे में वैसा उन्हें भान नहीं है और

ऐसा कहते हैं। उनके मन में ऐसा लगता है कि 'अपनी कीमत बढ़ गई है न! बुढ़ापा है न!'

अपने पास ज्ञान है इसलिए हम ऐसा बोल सकते हैं कि 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' बोलेंगे तो कमज़ोर शरीर में भी शक्ति आ जाती है जबकि बाहर वाले तो 'मैं खत्म हो गया हूँ' बोलते हैं और खत्म हो जाते हैं।

शरीर बूढ़ा हुआ है लेकिन क्या आत्मा बूढ़ा हो गया है? आत्मा अनंत शक्ति वाला है। जो जितनी शक्ति निकाले (प्रकट करे) उतनी उसके बाप की!

बोलते ही दूर हो जाता है डिप्रेशन

जब शरीर ही खुद का नहीं बन सकता तो फिर अन्य कोई भी खुद का नहीं बन सकता। ऑल दीज़ आर टेम्पेररी। आत्मा खुद का है। देह(का मालिक अहंकार है), मन डिप्रेस होने लगे तो कहना, 'हमारे पास अनंत शक्ति है' ज्ञान वालों का मन निर्बल नहीं होता। 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' बोलते ही मन एक्ज़ेक्ट (ठीक) हो जाता है। शरीर के सामने मन कमज़ोर पड़े तो सब खत्म हो जाता है।

यदि भीतर ऐसा उल्टा बोले तो हमें सीधा बोलना है। यदि वह कहे कि, 'कमज़ोरी लग रही है', तो कहना, 'बोलो चंदूभाई, मैं अनंत शक्ति वाला हूँ।' अगर पाँच मिनट तक 'अनंत शक्ति वाला हूँ' बोलेंगे तो फर्स्ट क्लास हो जाएगा।

यदि अहंकार भग्न हो जाए तो क्या करना है? अहंकार को ज़ोर से तोड़ दे तो? आसपास वाले शस्त्रों से गहरे घाव लगाएँ लेकिन आत्मा में अनंत शक्ति है' तो कहना है 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ', तुझे जो करना है, वह करता रह न! हमें हठ पकड़कर बैठ जाना है। तप करना है। तब फिर वे अपने आप ही धीरे-धीरे कम हो जाएगा। जब टोलियाँ भी कम हो जाएँगे तब फिर उनका बल टूट जाएगा।

'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' कहते ही सब बंध हो जाएगा। चाहे कैसा भी हो फिर भी 'अनंत शक्ति वाला हूँ' बोलने से हल आ जाएगा। आत्मा की शक्ति अपार है।

ब्रह्मांड को हिला दे, ऐसी शक्ति प्रकट करते हैं दादा

दादा भगवान का नाम लोगे न तो चाहे कैसी भी परिस्थिति में जब मन स्थिर नहीं हो रहा, तब भी वह स्थिर हो जाएगा। चाहे किसी भी पोज़िशन में 'दादा भगवान को नमस्कार करता हूँ' बोलना। क्योंकि कि चौदह लोक के नाथ को मैंने खुद देखा है। उनमें क्या-क्या शक्ति नहीं होगी? वे अनंत शक्ति के धनी हैं! तो अब बोलोगे न ऐसा?

यह जो आप ऐसा बोलते हो कि 'अनंत शक्ति है' वह शक्ति कितनी? वह कैसा है? जैसे कि हम छोटे बच्चे से पूछें कि समुद्र देखने गया था? कितना बड़ा था? तो उसके हाथ जितने फैल सकते हैं उतना दिखाएगा, उसी तरह अपने महात्माओं का भी है लेकिन आत्मा में तो गज़ब की शक्ति है! अनंत शक्ति है! पूरे ब्रह्मांड को हिलाने की शक्ति है! लेकिन घर के मालिक को, वह देखना नहीं आता, उसमें कोई क्या कर सकता है?

अनंत शक्ति के उपयोग से मिलता है शाश्वत सुख

प्रश्नकर्ता : आत्मा की अनंत शक्तियों का उपयोग, इस संसार से छूटने के काम आता है, फिर और क्या प्राप्त होता है?

दादाश्री : अनंत शक्ति के उपयोग से सिर्फ सुख मिलेगा, कायम का, परमानेन्ट सुख।

बाकी की सभी शक्तियाँ भीतर हैं ही लेकिन हमें किसलिए चाहिए? हमें तो सुख चाहिए। मनुष्य, जीवमात्र सुख ही ढूँढता है। सुख के लिए ही वह सारी झंझट करता रहता है। संसार में कल्पित सुख मिलता है, वह सुख नाशवंत है, अंत वाला है और अंत में फिर दु:ख ही मिलता है। वह दु:ख भी नाशवंत है, कल्पित है और सुख भी कल्पित है। सच्चा सुख नहीं है और सच्चा सुख एक सेकन्ड के लिए भी मिले तो फिर हमेशा के लिए जॉइन्ट हो जाता, सनातन सुख। अत: हम हमेशा जो शाश्वत सुख ढूँढते हैं, अपना वह सुख मिल जाएगा। फिर किसी का दबाव नहीं, किसी की परवशता नहीं। सभी जीव यही ढूँढ रहे हैं, शाश्वत सुख। वह सुख मिल जाने के बाद फिर दु:ख नहीं आता और परवशता नहीं आती।

हर एक प्रदेश में अपार सुख

खुद के पास अपार शक्तियाँ हैं लेकिन भान नहीं होने की वजह से सारी शक्तियाँ आवृत हो गई हैं। खुद अनंत सुख का धाम है। हर एक प्रदेश में खुद सुख का धाम है लेकिन कहाँ गया वह सुख? आत्मा के हर एक प्रदेश में एकाकार, जैसे आलू में अनंत-अनंत जीव होते हैं, वैसे ही आत्मा में भी प्रत्येक प्रदेश में एकाकार। हर एक प्रदेश को देख सकता है, जान सकता है। हर एक प्रदेश में आनंद है। यह ज्ञान मिलने के बाद जैसे-जैसे प्रदेश निरावृत होते जाएँगे, वैसे-वैसे आनंद बढ़ता जाएगा। ऐसा है यह वीतराग विज्ञान।

आत्मा खुद वीतराग है, अनंत प्रदेशों वाला है। खुद के प्रदेश में कोई भी राग-द्वेष नहीं हैं। निरा वीतराग भाव ही है हर एक प्रदेश में।

आत्मा खुद स्वयं सुखी, परमानंदी एक-एक प्रदेश में इतने अधिक सुख हैं! वे सभी प्रदेश आवृत हो गए और यह पराई पीड़ा व दु:ख आ गए। और हमने माना की 'यह मैं ही हूँ', इसलिए मार खाई। तो जब एक भी प्रदेश में '*पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) परमाणु' को 'मेरा' नहीं माना जाएगा तब खुद का संपूर्ण सुख बरतेगा। इसलिए अब हम कहते हैं कि 'यह मैं नहीं हूँ', तो एक दिन ये सब चले जाएँगे लेकिन हर एक प्रदेश में अपार सुख है।

सिद्धों का प्रत्येक प्रदेश खुला हुआ होता है। हर एक प्रदेश में खुद का अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन और अनंत सुख होता है! भगवान ने कहा है कि सिद्ध भगवानों का एक मिनट का आनंद इस पूरे संसार के तमाम जीवों के एक साल के आनंद के बराबर होता है। लो, एक मिनट में! क्या सिद्ध भगवान जैसा आनंद आपको नहीं रहता? आप आठवें भाग वाले सिद्ध बन गए हो फिर आपको कितना रहना चाहिए?

आत्मा का स्पर्श होते ही दु:ख भी बन जाता है सुख

प्रश्नकर्ता : आगे कहा है कि 'आत्मा अनंत आनंद का धाम है,' इस बारे में ज़रा ज़्यादा समझाएँगे?

दादाश्री : आत्मा का पूरा अस्तित्व ही आनंद है। जैसे आनंद का ही कंद हो न, उसके समान है। उसमें दु:ख घुस ही नहीं सकता, खुद ही सुख। जिस प्रकार बर्फ के अंदर अंगारे नहीं रह सकते हैं न, उसी तरह से, यह आनंद का ही गोला है। इसमें अन्य कुछ भी नहीं घुस सकता। अत: यदि मूल स्वरूप में आ जाए तो आनंद ही है, दु:ख रहेगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो दु:ख भुगतने वाला अपना शरीर है या कोई और है? दु:ख कौन भुगतता है?

दादाश्री : अहंकार दु:ख भुगतता है। यह जो दु:ख होता है वह अहंकार को होता है और सुख होता है वह भी अहंकार को होता है। बीच में यह अहंकार की फाचर है और वही अज्ञानता

है। मैं कर रहा हूँ और मैं भोग रहा हूँ, वही अहंकार है। यदि यह अहंकार चला जाए तो आत्मा रूप बन जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह पीड़ा आत्मा को स्पर्श नहीं करती?

दादाश्री : आत्मा को कभी भी पीड़ा का स्पर्श नहीं हुआ है और यदि पीड़ा उसे स्पर्श करे न, तो वह पीड़ा सुखमय हो जाती है। आत्मा तो अनंत सुख का धाम है। माने हुए आत्मा को पीड़ा होती है, मूल आत्मा को कुछ भी स्पर्श नहीं कर सकता।

बर्फ की कोई बड़ी सिल्ली हो और यदि उस पर अंगारे ड़ालें तो क्या बर्फ जलेगी? बर्फ जलेगी या आग बुझ जाएगी?

प्रश्नकर्ता : आग बुझ जाएगी।

दादाश्री : बर्फ कभी भी नहीं जल सकता, आग को बुझना पड़ता है। जैसे यहाँ पर बर्फ ठंड का कंद है, वैसे ही आत्मा आनंद का कंद है इसलिए यदि दुःख इसे स्पर्श करे न, तो वह भी सुखरूप बन जाएगा।

आत्मा कैसे सुख का धाम होगा! निरा सुख ही छलकता रहता है। सुख का ही झरना है।

यह बर्फ का उदाहरण तो मानो कि स्थूल उदाहरण है, 'एक्ज़ेक्ट' नहीं कहा जा सकता लेकिन आत्मा अनंत सुख का धनी है, उसे दुःख स्पर्श ही नहीं कर सकता। कैसे करेगा? जो उसे स्पर्श करे उसे सुख हो जाता है, स्पर्श मात्र से सुखी हो जाता है।

निराकुलता में आत्मसुख

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी आनंद-उल्लास का अतिरेक हो जाए तो क्या वह आत्मा का है?

दादाश्री : बहुत उल्लास होने लगे तो वह भी आत्मा का स्वभाव नहीं है और जो डाउन (कम) हो जाता है, वह भी आत्मा का आनंद नहीं है। वह दृष्टि परिवर्तन का रोग है। वह जो ऊपर-नीचे जाता है वह भी पड़ोसी चंदूभाई का माल है। आत्मा तो अपने स्वाभाविक आनंद में रहता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् कभी जो आनंद का अतिरेक होता है, वह यह नहीं है, लेकिन उसके जैसा दिखाई देता है।

दादाश्री : वह जो अति होती है, वह भी हम नहीं हैं। हमारे पड़ोसी जो डाउन हो जाते हैं, वह भी हम नहीं हैं। ये सब तो पड़ोसी के गुणधर्म हैं, अति होना, नीचे जाना, बढ़ना-घटना। इनसे अलग रहकर खुद को अपने घर में ही मुकाम करना है। उसके बाद तब चेहरे पर आनंद आएगा। किसी को ऐसा लगेगा की भाई कुछ नए प्रकार की खोज करके लाया है! इनके पास कुछ है! इस तरह जो उल्लास बढ़ता-घटता है, वह आत्मविभाग नहीं है।

मनुष्य तो हवा से जीवित रहता है, पानी मिले तो जीवित रहता है, खाना मिले तो जीवित रहता है लेकिन इसे तो किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। इसे कोई जिला नहीं सकता, इसे कोई मार नहीं सकता। कोई दुख नहीं दे सकता। अनंत जन्मों में अनंत कठिनाइयों में भी वह कठिनाई प्रूफ, कठिनाई रहित। उसे कोई भी कठिनाई स्पर्श नहीं कर सकती, कोई दुःख स्पर्श नहीं कर सकता। उसकी मृत्यु नहीं हो सकती। कोई भी ऐसा उपाय नहीं हैं जिससे उसकी मृत्यु हो सके। कोई जीवन भी नहीं दे सकता। वह खुद की स्वयं शक्ति से ही जीवित रहता है और स्वयं सुख का भोक्ता है।

प्रश्नकर्ता : स्वयं सुख अर्थात् कैसे सुख?

दादाश्री : ऐसा सुख, जो दुःख रहित है।

जिसमें अंतर दु:ख नहीं आते। जो सुख इमोशनल वाला नहीं होता है, निराकुलता वाला होता है। यदि कोई गालियाँ दे तो व्याकुल नहीं होता और फूल चढ़ाए तो आकुल नहीं होता।

शाश्वत सुख अंदर, उसके बावजूद भी बाहर सुख ढूँढता है

आत्मा अनंत आनंद का धाम है इसके बावजूद भी बाहर सुख ढूँढता रहता है। यह तो अंदर ही सुख है लेकिन संसार में सभी सुख ढूँढते हैं लेकनि सुख की परिभाषा ही तय नहीं करते। 'सुख ऐसा होना चाहिए कि जिसके बाद कभी भी दु:ख न आए।' संसार में वैसा ऐसा एक भी सुख हो तो ढूँढ निकाल, जा। शाश्वत सुख तो खुद में, स्व में ही है। खुद अनंत सुख का धाम है और लोग नाशवंत चीज़ों में सुख ढूँढने निकले हैं!

आनंद भीतर से आना चाहिए। बाहर से, आँखों से देखकर आए, वैसा नहीं चाहिए। सनातन आनंद चाहिए! चेतन का आनंद तो एक बार आने के बाद कभी नहीं जाता। चेतन का आनंद सनातन होता है!

आज्ञा का पालन हो तो बरते आनंद

हमारी आज्ञा का पालन हो तो निरा आनंद ही रहेगा। आज्ञापालन करने वाला होना चाहिए। कभी भी उलझन में नहीं पड़ता और आनंद में रहता है।

आपको क्या रहता है भाई, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा रहता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अखंड रूप से। चाहे कैसे भी संयोग हों, उनमें चिंता व दु:ख नहीं रहते लेकिन परम आनंद स्वरूप क्या है, वह अभी भी ठीक से समझ में नहीं आया।

दादाश्री : दु:ख में जो आनंदमय स्थिति रहती है, उसे आनंद कहते हैं

प्रश्नकर्ता : दु:ख तो यों गायब ही हो जाता है।

दादाश्री : वही आनंद है। जब आनंद रहता है, तब सुख और दु:ख के असर गायब हो जाता है, उसी को आनंद कहते हैं। जगत् विस्मृत करवा दे, उसी को आनंद कहते हैं।

दु:ख के भागाकार गुणों द्वारा

एक दिन यदि आत्मा के साथ व्यवहार बाँध ले तो फिर कभी दु:ख आएगा ही नहीं। सुखिया का संग करें तो फिर दु:ख आएगा ही कहाँ से? पूरे संसार (जगत्) का दु:ख आत्मा पर आ पड़े, फिर भी वह आराम से स्थिर रहता है क्योंकि वह दु:ख हम पर नहीं पड़ता। दु:ख, दु:ख पर पड़ता है क्योंकि आत्मा में दु:ख नामक गुण है ही नहीं। आत्मा निरंतर सुख का ही कंद है पूरा। जहाँ से देखो, वहाँ से निरा सुख ही, लेकिन 'मैं बहुत दु:खी हूँ' ऐसा चिंतन करता है, इससे खुद का अनंत सुख आवृत हो जाता है और दुखिया बन जाता है। 'मैं सुखमय हूँ', ऐसा चिंतन करेगा तो सुखमय बन जाएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, थोड़ा और समझाएँगे, 'मैं बहुत दु:खी हूँ' ऐसा चिंतन करने से दु:खी हो जाता है?

दादाश्री : आपको यह ज्ञान तो मिल गया है फिर भी अगर आप कहो कि 'सिर दु:ख रहा है, सिर दु:ख रहा है, सिर दु:ख रहा है', तो वह बढ़ता जाता है। हाँ, इसलिए अगर सिर दु:खे, तब कोई पूछे कि 'भाई, अभी क्यों गुमसुम हो?' तो कहना कि 'ज़रा असर हो गया है' और वापस हमें क्या बोलना है, कि 'अनंत सुखधाम हूँ, अनंत सुखधाम हूँ।' अगर हम भागाकार करें न, तो फिर रकम में कुछ बाकी नहीं रहेगा जबकि संसारियों में तो गुणाकार होता है। जिन्हें ज्ञान नहीं है न, उनका गुणाकार होता है। कैसे?

प्रश्नकर्ता : अज्ञान के कारण।

दादाश्री : 'मुझे दु:ख रहा है' कहता है इसलिए। ऐसा कहने से बढ़ता जाता है। आत्मा का स्वभाव कैसा है? जैसा चिंतन करता है वैसा ही बन जाता है। उसने ऐसा चिंतन किया कि 'सिर दु:ख रहा है' तो वैसा। हमें भागाकार किससे करना चाहिए? 'अनंत सुख का धाम हूँ।'

यह सारा रास्ता मैंने बता दिया है। सभी रास्ते इसमें (सत्संग में) बता दिए हैं, लेकिन अगर ढूँढ निकाले तो उसमें सारी दवाईयाँ हैं। दवाखाने की सारी दवाईयाँ इसमें रख दी है। कोई भी दवाई बाकी नहीं रखी है लेकिन अब इतना तो पता लगाना पड़ेगा न कि ये शीशियाँ कहाँ पड़ी हैं?

एक बार कहा कि 'मैं अनंत-परमानंद सुख वाला हूँ', तो फिर 'मुझे दु:ख होता है' ऐसा नहीं बोलना चाहिए। ऐसा बोलेगा तो चिपकेगा। यदि सर्वज्ञ की भाषा में समझ जाए तो वह पद प्राप्त हो जाएगा।

तब बोलना है, 'मैं अनंत सुख का धाम हूँ'

प्रश्नकर्ता : जब शरीर में कोई वेदना होती है तो उस समय, वास्तव में निश्चय से तो आत्मा निर्वेदक है, मन व शरीर वेदक हैं। उन्हें वेदना होती है लेकिन उस समय 'मैं अनंत सुख का धाम हूँ, मैं अनंत सुख का धाम हूँ' ज़ोर से बोलेंगे तो सारी वेदना चली जाएगी। उसका ज़रा सा भी भार महसूस नहीं होगा।

दादाश्री : पाँच-पच्चीस बार बोलेंगे तो साफ हो जाएगा।

यह शरीर कठिनाइयों का कंद है और आत्मा अनंत सुख का कंद है। शरीर तो क्षणभर भी चैन से नहीं बैठने देता। रोज़ खिलाते हैं, पिलाते हैं, नहलाते हैं, धुलाते हैं फिर भी सीधा नहीं रहता।

कभी अगर चंदूभाई की तबियत ठीक न हो, हाथ-पैर दु:ख रहे हों तो कहना 'बोलो, अनंत सुख का धाम हूँ।' यह तो खुद की पूँजी में से खर्च करना है न! पहले तो परायों से माँगते थे।

यदि शरीर पर दु:ख आ पड़े और 'मैं अनंत सुख का धाम हूँ' बोले तो आमने-सामने बैलेन्स होकर ठीक हो जाएगा। जब थोड़ी-बहुत मानसिक दु:ख हो तब 'अनंत सुख का धाम' बोलने से भीतर सुख लगेगा।

जब तक शरीर कमज़ोर है, तब तक वेदकता आनी ही है और जब वह बहुत ज़्यादा आए तब आत्मा के गुण याद करते ही जाना है, तो वेदकता खत्म हो जाएगी। हर एक को वेदकता आती ही रहती है लेकिन अज्ञानियों को दिखाई नहीं देती, जबकि ज्ञानियों को दिखती ही रहती हैं। उस समय आप हिल मत जाना। ऐसी स्थिति में शुद्धात्मा का स्मरण करना और उसके गुणों का रटन करना।

डिप्रेशन के समय चंदू से बुलवाना

देह का, मन का स्वभाव है कि या तो एलिवेशन या फिर डिप्रेशन। अब हम चंदूभाई से अलग हो गए हैं इसलिए व्यवहार तो अलग रखना पड़ेगा न? अत: चंदूभाई से बातचीत करे कि डिप्रेशन आया है? तो हम बुलवाएँगे कि 'मैं अनंत सुख का धाम हूँ' तो चंदूभाई बोलेंगे, 'मैं अनंत सुख का धाम हूँ।' आपको इसमें खुद के गुणों का आरोपण करना है, तब फिर रेग्युलर हो जाएगा।

तुझे अकुलाहट होने लगे तब बोलना 'मैं अनंत सुखधाम हूँ। मैं अनंत सुखधाम ऐसा परमात्मा हूँ। मैं अनंत सुख का कंद हूँ।' तो सुख उत्पन्न होगा। खुद संपूर्ण सुख स्वरूप, परमानंदी है, वह नापसंद को 'मैं अनंत सुख वाला हूँ' कहकर बदल देता है।

मोहनीय के सामने अनंत सुखधाम

अर्थात् अपनी शक्तियाँ इसमें डालनी है। अपने में शक्तियाँ तो अपार हैं! वे इसमें डालनी हैं। पड़ोसी है न, फाइल नं वन! उसे यदि मोह चढ़े तो बोलना कि 'मोहनीय अनेक प्रकार की होने से, उनके सामने मैं अनंत सुख का धाम हूँ' उससे मोह खत्म हो जाएगा। अनंत मोह होने की वजह से उसके सामने मैं अनंत सुख वाला हूँ। मेरे सुख के सामने मोहनीय का कोई हिसाब ही नहीं है।

वे विनाशी सुख हैं जबकि यह तो अविनाशी सुख! अनंत प्रकार के मोह हैं और उनमें 'मैं अनंत सुखधाम हूँ' ऐसा कहता है इसलिए मुझे अन्य किसी मोह की ज़रूरत नहीं है। यह तो जो फँस गया है, अब उसमें से निकल जाना है।

स्व-भजना से ही यथार्थ रस उत्पन्न होता है

प्रश्नकर्ता : जैसे इस *पुद्गल* के रस हैं, उसी तरह आत्मा के रस, आनंद प्रकट होना चाहिए न?

दादाश्री : ऐसा है कि आप अपरिग्रही किस आधार पर हो? 'अक्रम विज्ञान' के आधार से! परंतु व्यवहार से अपरिग्रही नहीं हो, यानी कि जब तक 'अपरिग्रही दशा' नहीं हो जाती, तब तक अंतिम 'वस्तु' हाथ में नहीं आएगी!

प्रश्नकर्ता : तब तक सच्चा रस, आनंद प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ', 'मैं अनंत दर्शन वाला हूँ', 'मैं अनंत सुख का धाम हूँ', 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ...' बोलो, तो सच्चा रस उत्पन्न हो जाएगा! आत्मा तो खुद आनंदमय ही है, यानी वह 'वस्तु' सर्व रसमय ही है और वह खुद में है ही परंतु खुद को अपनी जागृति की कमी के कारण, पता नहीं चलता कि वह कहाँ से आ रहा है।

स्व-संवेदन शक्ति प्रकाशमान करती है, पूरा ब्रह्मांड

प्रश्नकर्ता : आरती में 'स्व-संवेदन शक्ति, ब्रह्मांड प्रकाशे स्वयं' ऐसा कहा गया है, तो स्व-संवेदन का अर्थ क्या है?

दादाश्री : स्व की अनुभूति, स्व-संवेदन अर्थात् खुद, अपना वेदन सुख भोगतता है। खुद, अपने वेदन से सुख में रहता है और यह सुख अन्य कोई नहीं देता। खुद अनंत सुख का धाम है इसलिए खुद अपना ही वेदन, स्व-संवेदन अर्थात् वह स्व-संवेदन शक्ति है। उससे ज्ञाता-दृष्टा रह सकते हैं। अत: पूरा ब्रह्मांड प्रकाशमान दिखाई दे, तब पूर्णाहुति होगी।

पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशमान करने कि शक्ति आत्मा में है। खुद, खुद की पूरे बह्मांड को प्रकाशमान करने की जो स्व-संवेदन शक्ति है, उसे केवलज्ञान कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : वह 'स्व-संवेदन शक्ति, बह्मांड प्रकाशे स्वयं' का क्या अर्थ है? वह ज़रा समझाए। वह आपने केवलज्ञान के लिए कहा है।

दादाश्री : जो आम खाता है, वह आहारी और उसमें मस्त हो जाए तो वह पर-संवेदन कहलाता है। पराई चीज़ में से उसे वेदन का सुख आ रहा है। जबकि स्व में आत्मरमणता से स्व-संवेदन होता है। उससे पूरा ब्रह्मांड प्रकाशित हो उठता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् आत्मरमणता?

दादाश्री : आत्मा में से ही वेदन हो तो वह स्व-रमणता है। वह स्व-संवेदन में परिणाम होता है और फिर पूरा ब्रह्मांड प्रकाशमान होता है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा को स्व-संवेदन होता है?

दादाश्री : वास्तव में वह सारा *पुद्गल* है, आत्मा को वेदन नहीं है। वह किसे हैं? *पुद्गल* को।

यदि आत्मस्वरूप है, तो स्व-संवेदन बोलने की ज़रूरत ही नहीं है? यदि आप भान में ही हो तो फिर आपको 'मैं भान में हूँ' ऐसे बोलने की ज़रूरत नहीं है। जो नहीं हो और ज़रा-ज़रा भान में आ रहा हो, वह बोलता है कि 'मैं भान में हूँ।'

केवलज्ञान के बाद महावीर भगवान को 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा बोलना नहीं पड़ा। 'मुझे स्व-संवेदन है' ऐसा भी नहीं बोलना पड़ा। 'अनंत ज्ञान वाला हूँ, अनंत ज्ञान वाला हूँ, मैं मोक्ष स्वरूप हूँ' ऐसा भी नहीं बोलना पड़ा। देह है इसलिए उसके आधार पर स्व-संवेदन कहते हैं।

संसार में रहकर अनुभव करता है बारहवाँ गुणस्थानक

अस्पष्ट वेदन यानी 'मैं कर्ता नहीं हूँ', उसे ऐसा भान हो जाता है तो खुद को ऐसा भान हो जाता है कि 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, मैं अनंत दर्शन वाला हूँ और अनंत शक्ति वाला हूँ', 'मैं चंदूभाई हूँ', वह भान टूट जाता है और फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ', खुद को ऐसा भान हो जाता है लेकिन वह अस्पष्ट कहलाता है। अस्पष्ट अर्थात् एकदम अलग नहीं, तन्मयाकार! अब इतना ही होना बहुत है। इसका एक आना भाग भी किसी जन्म में नहीं हुआ है न! यह जो आपको प्राप्त हुआ है, उसका एक आना (सोलहवाँ भाग) भी किसी को मिल जाए तो उसे समकित कहा जाएगा। यह तो अद्‌भुत पद मिला है! लेकिन आपको इस पद को भोगना आना चाहिए न! यह तो सरलता से मिल जाता है न, इसलिए बात समझ में नहीं आती।

ओहोहोहो! गुणधर्मों की तो सीमा ही नहीं है। आत्मा अनंत प्रकार के गुणों से है। आत्मा एक-दो प्रकार के गुणों से नहीं है। वे जितने प्रकार के गुण यहाँ ज्ञानी पुरुष से जान लिए उतने प्रकारों से आपका हल आ गया। अभी और अनंत प्रकार के गुण जानना बाकी हैं। वे जानने से सरलता होगी। जितना जानोगे, उतनी सरलता। आप तो इतना ही जानते हो कि चार गुण हैं, अनंत ज्ञान वाला है वगैरह, लेकिन इस तरफ अनंत गुण, उसका हिसाब ही नहीं है। पूरे ब्रह्मांड का प्रकाशक है और हमने वह आत्मा देखा है इसलिए बात को समझने जैसा है, इन शॉर्ट। वर्ना संसार में रहकर ऐसी मोक्षमार्ग के बारहवें गुणस्थानक की बात ही नहीं कर सकते। चौथे में आ जाए तो बहुत हो गया।

मूल आत्मा अनुभवगम्य है, अरूपी पद है। केवली भगवान जो अनुभव करते हैं कि यह *पुद्‌गल* खुद से अलग ही पुतला है। सही किया या गलत, उसे नहीं देखना है। यह तो पुतला ही है, अचेतन है। कर्ता भाव दिखाई ही नहीं देना चाहिए। *पुद्‌गल* से या *पुद्‌गल* के मन-वचन-काया के वर्तन से कोई लेना-देना ही नहीं। आप उससे एकदम अलग ही हो। आपने अपना आत्मा देखा और जाना है। देखना अर्थात् जानना और जानना अर्थात् अनुभव होना। वह भान हुआ है और थोड़ा बहुत अनुभव भी आया है लेकिन मूल चीज़ पूर्ण रूप से अनुभव में आ जाए तो काम हो जाएगा!

वह तो वस्तु ही अलग है! आत्मा जानने से जाना जा सके, ऐसी वस्तु नहीं है, वह ऐसा नहीं है कि बुद्धि से समझा जा सके वह तो अनुभवगम्य वस्तु है।

चंदू पड़ोसी, वहाँ सनातन अनुभूति

'आई'(मैं) में इन्टरेस्ट आए तो निरा सुख ही है। सुख का ही धाम है, परम सुख का धाम! अनंत सुख का धाम, जिस सुख के आने के बाद कभी भी दुःख आ ही नहीं सकता। फाँसी लगा दें तब भी नहीं। फाँसी लगा दें, तब भी फाँसी लगने वाले को फाँसी लगती है, जानने वाला जानता है। *पुद्‌गल* को फाँसी लगती है, आत्मा को कभी फाँसी नहीं लगती। इन अंबा लाल को

आप गालियाँ दो, मारो तब भी मुझ पर असर नहीं होगा क्योंकि दोनों एकदम अलग रहते हैं। फाँसी लगा दो तब भी मुझे हर्ज़ नहीं है। मेरी इच्छा नहीं हो लेकिन फिर भी अगर आप सब फाँसी लगा दो तो फिर हर्ज नहीं है क्योंकि मुझे पड़ोसी के रूप से इतना तो रखना ही पड़ेगा कि 'मेरी इच्छा नहीं होनी चाहिए। उन्होंने मेरे लिए चक्कर लगाए है', मेरा काम किया है। उतना उपकार तो मुझे मानना ही पड़ेगा न! यह पड़ोसी के रूप से रहता है। आप चंदूभाई के साथ पड़ोसी की तरह रहोगे, तब वहाँ पर सनातन अनुभूति होगी।

प्रश्नकर्ता : यह सनातन अनुभूति अर्थात् ऐसी सूक्ष्मातिसूक्ष्म वस्तु है, उसकी अनुभूति कैसे होगी? प्रत्यक्ष कैसे दिखाई देगा?

दादाश्री : आप आत्मा हो, ऐसी सनातन अनुभूति होगी और आत्मा की वह अनुभूति कैसी होती है? आत्मा निराकारी है, अमूर्त है। किसी चीज़ से दिखाई नहीं दे, ऐसा है और प्रत्यक्ष देखने का प्रयत्न करना, वह गुनाह है तो कोई पूछे कि फिर कैसे पहचानें? तब कहते हैं, 'अनुभव से।' वह अपने परमानंद नामक गुण से प्रकट होता है।

सभी शक्तियाँ मात्र परमात्मा में ही लगानी है

स्व-स्वरूप में आने से, परमात्मापन प्रकट होता रहता है, परमात्मा की शक्ति व्यक्त हो जाती है। अभी तो चंदूभाई की शक्तियाँ व्यक्त हुई हैं। मनुष्य में आए हो इसलिए चंदूभाई की शक्तियाँ व्यक्त हुई हैं लेकिन मनुष्यपन की अधिक शक्तियाँ व्यक्त नहीं हुई हैं इसलिए सामान्य मनुष्य ही माना जाता है।

पुद्गल की, आत्मा की सभी शक्तियाँ एक मात्र प्रकट परमात्मा में ही लगाने जैसी हैं। मनुष्य में पूर्ण परमात्म शक्ति है, जिसका उपयोग करना आना चाहिए। *पुद्गल* के प्रति जितनी सस्पृहता थी और आत्मा के प्रति नि:स्पृहता थी, तो अब *पुद्गल* के प्रति नि:स्पृहता जितनी अधिक होती जाएगी, उतनी ही आत्मा पर सस्पृहता आएगी।

ज्ञानी प्राप्त करवाते हैं स्वभावकृत शक्तियाँ

भीतर अनंत शक्तियाँ हैं, अनंत सिद्धियाँ हैं लेकिन अव्यक्तरूप से रही हुई हैं। भीतर रूपवान, सुंदर शक्तियाँ हैं, गज़ब की शक्तियाँ है! उन्हें छोड़कर बाहर से बदसूरत शक्तियाँ खरीद लाएँ। स्वभावकृत शक्तियाँ कितनी सुंदर है! और ये बाहर से विकृत शक्तियाँ खरीद लाए! भीतर दृष्टि ही नहीं पड़ी। आत्मा प्राप्त होने पर वे शक्तियाँ व्यक्त होने लगती हैं। मोक्ष जाने की अनंत शक्तियाँ हैं। वे शक्तियाँ अव्यक्त भाव से पड़ी हुई हैं, उन्हें व्यक्त करो।

'ज्ञानी पुरुष' सभी शक्तियाँ देने को तैयार हैं। शक्तियाँ आपके भीतर ही पड़ी हुई हैं लेकिन आपको ताला खोलकर लेने का हक़ नहीं है। ज्ञानी पुरुष के खोलने पर ही वे निकलती हैं।

भीतर कितनी ऐसी भव्य शक्तियाँ हैं! भीतर दृष्टि ही नहीं गई है न! यह तो यहाँ पर आत्मा की बात सुनते हैं तब दृष्टि पड़ती है। दृष्टि पड़ती है तब आत्मा प्राप्त होता है। आत्मा प्राप्त होने पर थोड़ी-बहुत शक्तियाँ निकलती हैं। तब हम देखते हैं कि, 'ओहोहो! इतनी अधिक शक्तियाँ भीतर में थीं और उनमें से थोड़ी सी निकलने पर इतना सुख लग रहा है, तो जब पूरी निकलेंगी, इसका पूरा विकास हो जाएगा तो कहाँ पहुँचाएगी! ज्ञानी पुरुष को हम देखें तब भी हमें लगता है कि इनमें हमसे कितनी अधिक शक्तियाँ प्रकट हुई हैं! तो वे शक्तियाँ हमें कितना आनंद देती हैं। सब में उतनी ही शक्तियाँ हैं। शक्तियों की कोई कमी-वमी नहीं है। अब हमें वे निकालनी हैं। आपको छूट दी है। जिस पद पर मैं बैठा हूँ उसी पद पर आपको बैठाया है।

-जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

2 दिसम्बर : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पूज्य नीरूमाँ के 75 वें जन्मदिन हर्षोल्लास से मनाया गया। सुबह ATPL से प्रभातफेरी की शुरुआत हुई जो समाधि स्थल तक दादा के पदों का गुंजन करते हुए पहुँची। समाधि स्थल पर महात्माओं द्वारा सामूहिक प्रार्थना व विधियाँ हुई। समाधि पर पूज्यश्री ने पूज्य नीरूमाँ के बारे में बातें कही उसके बाद स्वामी और दादा की आरती हुई। शाम को दादानगर हॉल में सत्संग में महात्माओं ने पूज्य नीरूमाँ के बारे में प्रश्न पूछे और पूज्यश्री ने पूज्य नीरूमाँ के जीवन चरित्र की बातें कीं। रात को समाधि पर ही विशेष भक्ति कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें आप्तपुत्र व आप्तपुत्रियों द्वारा दादाई पदों का गुंजन हुआ।

8-10 दिसम्बर : चेन्नई में सात साल बाद पूज्यश्री का सत्संग व ज्ञानविधि के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। स्थानीय महात्माओं ने परंपरागत तरीके से बेन्ड बाजे के साथ पूज्यश्री का जोशपूर्ण स्वागत किया। एक दिन के सत्संग के बाद ज्ञानविधि में 400 मुमुक्षुओं ने आत्माज्ञान प्राप्त किया। मरीना बीच पर पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ मोर्निंग वॉक किया। चेन्नई सेन्टर के कॉर्डिनेटर और महात्माओं को सेवार्थी सत्संग और दर्शन का भी लाभ प्राप्त हुआ। 10 दिसम्बर को आप्तपुत्र सत्संग में नए महात्माओं को ज्ञान और आज्ञा से संबंधित अधिक समझ प्राप्त हुई।

23-30 दिसम्बर : अडालज त्रिमंदिर संकुल के दादानगर में पारायण का आयोजन हुआ, जिसमें आप्तवाणी 13 उतरार्ध व आप्तवाणी 14 भाग- 1 का वाचन और उस पर पूज्यश्री के विशेष सत्संग का आयोजन हुआ। 'मैं, बावो और मंगलदास' तथा आप्तवाणी 14 के भाग-1 'विभाव' पर गहन सत्संग हुआ और महात्माओं द्वारा प्रश्न पूछे गए। क्रिसमस के दिन विदेशी महात्माओं द्वारा क्रिसमस गीत गाए गए और उसी रात्री को गरबा का आयोजन हुआ।

2 जनवरी : परम पूज्य दाादश्री की 31 वीं पुन्यतिथी के निमत्ति से अडालज त्रिमंदिर में सुबह 8 से 9 सामूहिक विधियाँ हुई। पूज्यश्री भी पधारें थे और दर्शन के पश्चात विधि करवाई। शाम 4-30 बजे एक घंटे की कीर्तन भक्ति के बाद पूज्यश्री का सत्संग हुआ, जिसमें दादाश्री के जीवन चरित्र पर वार्तालाप हुआ। रात 8-30 से 10-30 के बीच 'दादा ही दादा' इस विशेष कार्यक्रम में दादा के समय के महात्माओं के रेकॉर्डेड अनुभवों को स्पेशल विडीयो के द्वारा प्रस्तुत किया गया साथ ही कुछ महात्माओं ने खुद के अनुभव प्रत्यक्ष में व्यक्त किए।

5-6 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर के जॉयजेन्टक हॉल में आयोजित सत्संग व ज्ञानविधि में 1050 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम का अचानक आयोजन होने के बावजूद भी अच्छा रिस्पोन्स मिला।

10-13 जनवरी : शिरडी में (मुंबई व थाने के अलावा) महाराष्ट्र के महात्माओं के लिए ज़ोनल शिविर का आयोजन हुआ। 1100 महात्माओं ने इस शिविर का लाभ लिया। पूज्यश्री के विशेष सत्संग 'निर्दोष दृष्टि' 'पाँच आज्ञा की विशेष समझ' और 'कषायों से आवृत्त मोक्षमार्ग' टॉपिक पर हुए। पूज्यश्री और महात्माओं ने प्रसिद्ध साँईबाबा समाधि मंदिर के दर्शन किए। मंदिर के व्यवस्थापकों ने पूज्यश्री को समस्त परिसर के बारे में विस्तार से बताया और शाल ओढ़ाकर एवम् साँईबाबा की मूर्ति देकर उनका स्वागत किया। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक, गरबा व दर्शन का लाभ प्राप्त किया। महाराष्ट्र के विविध सेन्टर के GNC के बच्चों व युवाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। WMHT, MMHT सत्संग, युवाओं व बच्चों के लिए विशेष सत्संग, आप्तपुत्र सत्संग, सामायिक, पाँच आज्ञा पर वर्क शॉप वगैरह का भी महात्माओं ने पूर्ण रूप से लाभ लिया। चार दिन के इस शिविर में अनेक प्रकार के ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों द्वारा महात्माओं ने बहुत आनंद का अनुभव किया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

अंजड **दिनांक : 12 अप्रैल** **समय :** रात 8 से 10 **संपर्क :** 9843652143
स्थल : अन्नपुर्णा भवन पाटीदार समाज, बायपास रोड, अंजड (मध्यप्रदेश).

इन्दौर **दिनांक : 13 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9893091212
स्थल : दादा दर्शन, 89बी, राजेन्द्र नगर, टांकी होल रोड, इन्दौर (मध्यप्रदेश).

इन्दौर **दिनांक : 14 अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 5 **संपर्क :** 9893091212
स्थल : दादा दर्शन, 89बी, राजेन्द्र नगर, टांकी होल रोड, इन्दौर (मध्यप्रदेश).

ग्वालियर **दिनांक : 16 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9926265406
स्थल : के.एस. मेमोरीयल हाई स्कूल, गायत्री विहार, पिन्टुपार्क, मुरार, ग्वालियर (मध्यप्रदेश).

ग्वालियर **दिनांक : 17 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9926265406
स्थल : चौधरी गेस्ट हाउस, धरमवीर पेट्रोलपंप के सामने, एयरफोर्स रोड, ग्वालियर (मध्यप्रदेश).

भोपाल **दिनांक : 20 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 9425190511
स्थल : डी-1 सुरेन्द्र गार्डन, भागसेवानिया थाने के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (मध्यप्रदेश).

भोपाल **दिनांक : 20 अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9826926444
स्थल : जनक विहार कोम्प्लेक्स, एयरटेल ओफिस के सामने, मालविया नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश).

भोपाल **दिनांक : 21 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 तथा दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9826926444
स्थल : कुकुट विकास निगम, सभागृह मेनीट चौराहे के पास, कोलार रोड, भोपाल (मध्यप्रदेश).

आसाम

गुवाहाटी	दि : 25 व 31 मार्च	संपर्क : 9085405087
तेजपुर	दि : 26 मार्च	संपर्क : 9101753686
लेडो	दि : 28 मार्च	संपर्क : 8638802416
तीनसुकीया	दि : 29-30 मार्च	संपर्क : 9954224104
गुवाहाटी	दि : 1 अप्रैल	संपर्क : 9085405087
नलबारी	दि : 2 अप्रैल	संपर्क : 9954875897
बक्सा	दि : 2 अप्रैल	संपर्क : 9706896109
ईथेलबारी	दि : 3 अप्रैल	संपर्क : 9382899417

उत्तरप्रदेश

इलाहाबाद	दि : 28 मार्च	संपर्क : 9935378914
मिरझापुर	दि : 29 मार्च	संपर्क : 9415288161
वाराणसी	दि : 31 मार्च	संपर्क : 9795228541
वाराणसी	दि : 1 अप्रैल	संपर्क : 9795228541
गोरखपुर	दि : 2 अप्रैल	संपर्क : 7800656738
महाराजगंज	दि : 4 अप्रैल	संपर्क : 9793353018
गोरखपुर	दि : 7 अप्रैल	संपर्क : 7800656738

महाराष्ट्र

नागपुर	दि : 29 मार्च	संपर्क : 9970059233
अमरावती	दि : 30-31 मार्च	संपर्क : 9403411471
अमरावती	दि : 1-2 अप्रैल	संपर्क : 9403411471
अकोला	दि : 2-3 अप्रैल	संपर्क : 9422403002
जलगाँव	दि : 4 अप्रैल	संपर्क : 9420942944
औरंगाबाद	दि : 5 अप्रैल	संपर्क : 8308008897
नासिक	दि : 6-7 अप्रैल	संपर्क : 9021232111

कर्णाटक-गोवा

बेंगलुरु	दि : 29-31 मार्च	संपर्क : 9341948509
हुबली	दि : 1-2 अप्रैल	संपर्क : 9513216111
बेलगाम	दि : 3-5 अप्रैल	संपर्क : 9945894202
मडगाँव	दि : 6-7 अप्रैल	संपर्क : 8698745655

बिहार

पटना	दि : 5 अप्रैल	संपर्क : 9431015601
मुझफ्फरपुर	दि : 6-7 अप्रैल	संपर्क : 9608030142

छत्तीसगढ़

भिलाई	दि : 5-6 अप्रैल	संपर्क : 9407982704
रायपुर	दि : 7-8 अप्रैल	संपर्क : 9329523737
बिलासपुर	दि : 9-10 अप्रैल	संपर्क : 9425530470

बंगाल

कोलकाता	दि : 11-14 अप्रैल	संपर्क : 9830080820

मध्यप्रदेश

उज्जैन	दि : 15 अप्रैल	संपर्क : 9425195647
जबलपुर	दि : 18-19 अप्रैल	संपर्क : 9425160428

नेपाल

बुटवल	दि : 5-6 अप्रैल	संपर्क : +977-9847042399

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

Atmagnani Pujya Deepakbhai's Germany - UK Satsang Schedule (2019)

UK: + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org, Germany: +49 700 32327474

Date	From	to	Event	Venue
25-Mar-19	08:00 PM	10:00 PM	SATSANG	Wolf-Ferrari-Haus Rathausplatz 2, 85521 Ottobrunn, Munich, **Germany**
26-Mar-19	07:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
29 Mar -	All day		Akram Vignan Event	**Willingen, Germany**
03-Apr-19	07:00 PM	09:30 PM	Aptaputra Satasang	Indian Association Oldham Schoefield Street, Hathershaw, Oldham, OL8 1QJ
04-Apr-19	06:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
05-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	**Maher Centre,** 15 Ravensbridge Drive, Leicester, LE4 0BZ
06-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
06-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
07-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
07-Apr-19	02:30 PM	07:00 PM	GNAN VIDHI	
10-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	Aptaputra Satasang	**Hariben Bachubhai Nagrecha Hall,** 198-202 Leyton Road, London, E15 1DT
11-Apr-19	06:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
12-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Harrow Leisure Centre, Christchurch Avenue, Middlesex **Harrow,** HA3 5BD
13-Apr-19	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
13-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
14-Apr-19	08:30 AM	12:30 PM	Small Swami Pratishta	
14-Apr-19	02:30 PM	07:00 PM	GNAN VIDHI	
15-Apr-19	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
18-22 Apr	All day		UK SHIBIR	**Pre-registration required**

विदेश में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

USA-Canada ✦ 'SAB-US' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST

✦ **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST

✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK ✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)

✦ **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)

✦ **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)

✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ✦ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST

USA-UK-Africa-Aus. ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

जामनगर

22 फरवरी (शुक्र) शाम 7 से 10 - **सत्संग तथा 23 फरवरी** (शनि) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

स्थल : त्रिमंदिर, व्रजभूमि-1 के सामने, TGES स्कूल के पास, माणेकनगर, राजकोट रोड. **संपर्क :** 9924343687

जामनगर त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. 24 फरवरी 2019 (रविवार)

प्राणप्रतिष्ठा : सुबह 9-30 से 1 तथा **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती :** शाम 4-30 से 7-30

स्थल : त्रिमंदिर, व्रजभूमि-1 के सामने, TGES स्कूल के पास, माणेकनगर, राजकोट रोड. **संपर्क :** 9924343687

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

अडालज त्रिमंदिर

19 मार्च (मंगल), **पूज्य नीरुमाँ की 13वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

20 मार्च (बुध) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **21 मार्च** (गुरु) सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग**

21 मार्च (गुरु) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2019

8 से 12 मई - सत्संग शिविर

9 मई - पूज्यश्री के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम

11 मई - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी मार्च 2019 के अंक में दी जाएगी। **रेल्वे टिकट रिझर्वेशन चार महिने पहले एडवान्स में होता है, इसलिए यह जानकारी आपको टिकट बुक करने हेतु दी जा रही है।**

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

फरवरी 2019
वर्ष-14 अंक-4
अखंड क्रमांक - 160

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

आत्मगुणों की भजना से बन सकते हैं उस रूप

जब आँखें जलने लगें तो वह देखते रहना, पैर दुःखने लगें तो वह भी देखते रहना, सबकुछ देखते रहना। यदि नींद नहीं आए तो दूसरे उपाय हैं। आत्मा के वे जो स्वाभाविक गुणधर्म हैं न, उनमें से यदि एक गुण बोलोगे तो ठीक हो जाएगा। जैसे कि 'मैं अगुरु-लघु स्वभाव वाला हूँ।' लेकिन अज्ञान दशा में तो भुगतना ही होगा। ज्ञानदशा में उपाय हैं। यदि पौन घंटे तक ऐसा ध्यान करोगे कि खुद का स्वभाव अगुरु-लघु है तो आश्चर्य सर्जित होगा! आत्मा के जितने गुण हैं, उनके बारे में सोचो, मनन करते रहो तो वे गुण आपमें प्रकट होते जाएँगे, आत्मगुण विकसित होते जाएँगे, व्यक्त होकर प्रकट होते जाएँगे।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.